रजिस्ट्री सं. डी एल—33001/95 REGISTERED NO.—33001/95

सत्यमेव जयते

# भारत का राजपत्र
# The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 10] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 11, 1995 (फाल्गुन 20, 1916)
No. 10] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 11, 1995 (PHALGUNA 20, 1916)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

## विषय-सूची

| | पृष्ठ |
|---|---|
| भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं | 303 |
| भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं | 217 |
| भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं | 3 |
| भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं | 365 |
| भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम | * |
| भाग II—खण्ड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ | * |
| भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट | * |
| भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिसमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं) | * |
| भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं | * |
| भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी अधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं) | * |
| भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश | * |
| भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा-परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं | 189 |
| भाग III—खण्ड 2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस | 169 |
| भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं | -- |
| भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं। | 435 |
| भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस | 33 |
| भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को बताने वाला अनुपूरक | |

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए

# CONTENTS


| | PAGE |
|---|---|
| PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court. . . . . | 303 |
| PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court . . . . . | 217 |
| PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . . . | 3 |
| PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence . . . . . | 365 |
| PART II—SECTION 1—Acts, Ordinance and Regulations . . . . . | * |
| PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations . . . . . | * |
| PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . . . . | * |
| PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) | * |
| PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) . | * |
| PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) . | * |
| PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence . | * |
| PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India . | 189 |
| PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs . . . . . | 169 |
| PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . . | — |
| PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies . . . . . | 435 |
| PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies . | 33 |
| PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi | * |


*Folio Nos. not received

# भाग I—खण्ड 1

# [PART I—SECTION 1]

**(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं**

**[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]**

राष्ट्रपति सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1995

सं० 91-प्रेज/95:—राष्ट्रपति निम्नलिखित अफसरों कार्मिकों को उनके उत्कृष्ट वीरता पूर्ण कार्यों के लिये उन्हें कीर्ति चक्र प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. 2769281 कम्पनी हवलदार मेजर जगताप शिवजी बालु

6 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 28-01-94)

28 जनवरी, 1994 को जम्मू तथा कश्मीर के नवाद गांव, घाटबग और फराशगंद गांवों में कुछ उग्रवादियों के मौजूद होने की विशेष सूचना मिलने पर 6 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री ने प्रातः 7 बजे उनकी घेराबन्दी करने का काम शुरू किया।

कम्पनी हवलदार मेजर जगताप शिवजी बालु इस खोजी दल के कमांडर थे जिसे कई घरों की छानबीन करने का काम सौंपा गया था। उनमें से एक घर की छानबीन करते हुए जैसे ही हवलदार मेजर बालु सबसे ऊपर की मंजिल पर पहुंचे कि उनका दल वहां लकड़ी और घास के नीचे छिपे उग्रवादियों की भारी गोलीबारी में घिर गया और उनकी पहली गोली से हवलदार मेजर बालु घायल हो गये। वे निर्भीकता पूर्वक आगे बढ़े और उन्होंने उनमें से एक उग्रवादी को वहीं ढेर कर दिया और तत्पश्चात अन्य उग्रवादियों द्वारा उन पर दागी गई एक अन्य गोली लगने से वे गिर पड़े। वीर गति प्राप्त करने से पूर्व उन्होंने दो उग्रवादियों को निकल भागने का प्रयास विफल कर दिया जो बाद में उनके सैनिकों द्वारा की गई गोलीबारी से मारे गये। अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थितियों और भारी खतरे के बावजूद उस बहादुर सिपाही ने साहस, धैर्य और कर्त्तव्यपरायणता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस प्रकार हवलदार मेजर जगताप शिवजी बालु ने उग्रवादियों का मुकाबला करने में उत्कृष्ट वीरता और साहस का परिचय देते हुए अपने जीवन का बलिदान किया।

सेकण्ड लेफ्टिनेंट ऋषि अशोक मल्होत्रा (आई० सी–52671)

मराठा लाइट इन्फैन्ट्री (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 18-05-94)

18 मई, 1994 को सेकण्ड लेफ्टिनेंट ऋषि अशोक मल्होत्रा को जम्मू तथा कश्मीर के डोडा जिले में वन प्रान्त क्षेत्र में राष्ट्रविरोधी तत्वों के छिपने के स्थान का पता लगाकर उसे नष्ट करने का काम सौंपा गया था। सेकण्ड लेफ्टिनेंट ऋषि अशोक मल्होत्रा ने एक प्लाटून साथ लेकर यह कार्य शुरू किया और राष्ट्रविरोधी तत्वों के छिपने की जगह पर अचानक पहुंचकर धावा बोलने के उद्देश्य से बहुत अधिक ऊंचाई पर स्थित जंगल में अत्यधिक कठिन मार्ग से जाने का निर्णय लिया। दो रात तक लगातार चलकर 30 किलोमीटर रास्ता तय करने के बाद उस युवा अफसर ने 20 मई, 1994 को प्रातः उग्रवादियों के छिपने के स्थान को घेर लिया। फिर वे उग्रवादियों के छिपने की जगह की ओर बढ़े परन्तु तभी उग्रवादियों की ओर से उन पर भारी गोलीबारी होने लगी। वह बहादुर अफसर अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न किये बिना और उच्चकोटि की वीरता का प्रदर्शन करते हुए उग्रवादियों के छिपने के स्थान की तरफ बढ़ते रहे। उनकी उग्रवादियों के साथ बहुत ही कम दूरी से भारी गोलीबारी शुरू हो गई जिसमें उस बहादुर अफसर की कार्रवाई उत्कृष्ट रूप से आक्रामक रुख और अनुकरणीय दृढ़ संकल्प का परिचायक थी। उग्रवादियों के छिपने का स्थान जब कुछ ही गज की दूरी पर रह गया था तो उनके सीने पर गोली लगने से घाव हो गये। गम्भीर रूप से घायल हो जाने के बावजूद वे उग्रवादियों के छिपने के स्थान पर पहुंच गये और वीरगति प्राप्त करने से पूर्व दो राष्ट्रविरोधी तत्वों को बहुत ही निकट से गोलीमार कर उनका काम तमाम कर दिया।

इस प्रकार, सेकण्ड लेफ्टिनेंट ऋषि अशोक मल्होत्रा ने राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करने में उत्कृष्ट वीरता और अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए उच्चतम बलिदान किया।

2975200 हवलदार शिव नारायण सिंह, 27 राजपूत (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22-05-94)

22 मई, 1994 को प्रातः चार बजे विशिष्ट सूचना के आधार पर लैफ्टिनेंट कर्नल हरविन्दर सिंह लक्कार की कमान ने कमांडर के तीव्र प्रतिक्रिया दल को जम्मू कश्मीर के विहृडीपुरा गांव में भेजा गया था। राष्ट्रविरोधी तत्वों के संदिग्ध मकानों की घेराबंदी करके प्रातः सवा पांच बजे खोजबीन की कारवाई शुरू की गई। जब एक संदिग्ध घर की खोजबीन, की जा रही थी तो उसकी छत पर छिपे हुए दो राष्ट्रविरोधी तत्वों से सैनिकों पर गोलीबारी शुरू कर हवलदार शिव नारायण सिंह की ठोडी पर बाईं और गोली लगने से घाव हो गया। तत्पश्चात् एक उग्रवादी छत से कूदा और हवलदार शिव नारायण सिंह पर गोलीबारी करने लगा। गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद हवलदार सिंह दृढ़ साहस का परिचय देते हुए गोलीबारी करते रहे और उन्होंने उन दोनों उग्रवादियों को मार गिराया। हवलदार शिव नारायण सिंह को तत्काल अग्रिम मरहम-पट्टी पर ले जाया गया जहां घावों के कारण उनकी मत्यु हो गई।

इस प्रकार हवलदार शिव नारायण सिंह ने उग्रवादियों का मुकाबला करने में उत्कृष्ट वीरता और साहस का परिचय देते हुए अपने जीवन का बलिदान किया।

गिरीश प्रधान,
निदेशक

---

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी, 1995

सं० 92-प्रेज/95:—राष्ट्रपति निम्नलिखित अफसरों/कार्मिकों/व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिये उन्हें "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं —

1. श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह, सतना, मध्य प्रदेश (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18-1-93)

18 जनवरी, 1993 को श्रीमती श्यामवती और उनकी पुत्री श्रीमती मोन्टू रात के समय घर का कुछ सामान लेने के लिये बाजार गई थी। घर लौटते समय राजस्व निरीक्षण श्री एस० एम० श्रीवास्तव के निवास के समीप पांच असामाजिक तत्व छेड़खानी करने के इरादे से श्रीमती मोन्टू के पीछे पड़ गये। श्रीमती मोन्टू सहायता के लिये चिल्लाई और स्वयं को असामाजिक तत्वों के चुंगल से छुड़ाने का प्रयास करने लगीं। अपनी पुत्री के सम्मान की रक्षा के लिये श्रीमती श्यामवती ने भी सहायता के लिये चिल्लाना शुरू कर दिया। उसी समय 22 वर्षीय रवीन्द्र प्रताप सिंह जोकि एक विद्यार्थी थे, अपनी साइकिल से वहां से गुजर रहे थे। असामाजिक तत्वों को श्रीमती मोन्टू का शील भंग करने का प्रयास करते देख वे रुक गये और उन्हें ललकारा। श्री रवीन्द्र प्रताप ने असामाजिक तत्वों से श्रीमती मोन्टू को छोड़ देने के लिये कहा। इस पर उन्होंने श्रीमती मोन्टू को छोड़ दिया और रवीन्द्र प्रताप सिंह की ओर लपके। उन असामाजिक तत्वों के पास हथियार थे और वह संख्या में भी अधिक थे। श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह एक विवाहित महिला के सम्मान की रक्षा करने के लिये अपने जीवन को जोखिम में डालकर निर्भीकता-पूर्वक उन असामाजिक तत्वों से भिड़ गये। जिस समय यह लड़ाई चल रही थी तभी श्रीमती श्यामवती और उनकी पुत्री शीघ्रतापूर्वक से अपने महल्ले में गई और वहां जाकर लोगों को इस घटना की सूचना दे दी जब लोग उस स्थान पर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह जमीन पर पड़े हुए थे और उनके शरीर से बुरी तरह से खून बह रहा था। उन असामाजिक तत्वों ने श्री सिंह के पेट में छुरा घोंप दिया था। उनकी नाक और मुंह से भारी खून आ रहा था। अन्ततः श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह की घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई। बाद में उन असामाजिक तत्वों की पहचान कर ली गई।

इस प्रकार श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह ने एक विवाहित महिला के सम्मान की रक्षा करने में अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

2. मेजर कमल कालिया (आई० सी०-35555), मद्रास रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27-3-93)

डी० कम्पनी के कंपनी कमांडर मेजर कमल कालिया असम के तिनसुखिया और डिब्रूगढ़ जिलों में असम संयुक्त मुक्ति मोर्चे (अल्फा) के उग्रवादियों का मुकाबला करने के लिए चलाई जा रही संक्रिया "राइनो" के तहत सैन्य-कार्रवाई कर रहे थे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने उपर्युक्त जिलों में छिपे उग्रवादियों के बारे में सही आसूचना प्राप्त करने के लिए जाल बिछा रखा था। अल्फा गिरोह के शीर्ष नेता व तिनसुखिया के वित्त सचिव प्रकाश दत्ता के बारे में गुप्त सूचना मिलने पर उन्होंने 05 अप्रैल, 1992 को उसे गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने पकड़े गए उग्रवादी द्वारा दी गई सूचना के आधार पर अल्फा के लखीपठार नामक गढ़ पर धावा बोल दिया। बाद में उन्होंने कमल मोरान, बृजकान्त मेह्, लखी देवरी के नेतृत्व में चलाए जा रहे अल्फा गिरोह के 204 उग्रवादियों को भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद समेत आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर दिया।

27 मार्च, 1993 को मेजर कमल कालिया ने अपने सैन्य दल के साथ नवांग नामक एक दूसरे स्थान पर छापा मारकर वहां होने वाली अल्फा गिरोह की बैठक को नाकाम-याब कर दिया। इस कार्रवाई में उन्होंने प्रचार-सामग्री और कटे हुए स्मृति-चिन्हों समेत नौ उग्रवादियों को पकड़ लिया।

09 अप्रैल, 1993 को उन्हें अपने विश्वस्त सूत्रों से यह पता चला कि अल्फा गिरोह का एक दूसरा शीर्ष उग्रवादी रन्तु नियोग, मोरान-डिब्रूगढ़ मार्ग से मारूति कार में जा रहा है। मेजर कमल कालिया ने अपने सैन्य दल को तुरन्त सक्रिय कर सरगर्मी से उसका पीछा करना शुरू कर दिया। उस उग्रवादी का पीछा करते समय मेजर कमल कालिया सामने से आ रही एक सिविल बस से बुरी तरह से टकरा-कर वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार मेजर कमल कालिया ने निःस्वार्थ कर्तव्य-परायणता समर्पण-भावना, दृढ़निश्चय और आत्म-बलिदान की भावना का परिचय दिया।

3. स्क्वाड्रन लीडर राज शेखर मेहता (17212) प्रशासन

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 सितम्बर, 1993)

स्क्वाड्रन लीडर राज शेखर मेहता को भारतीय वायु-सेना की प्रशासन शाखा में 28 मई, 1983 को कमीशन प्रदान किया गया था। ये वायु सेना स्टेशन, तेजपुर में उप मुख्य प्रशासन अफसर हैं।

9 सितम्बर, 1993 को वायुसेना स्टेशन तेजपुर के कैंप में जंगली हाथियों का एक झुंड घुस आया और हवाई मैदान की दक्षिण दिशा में हवाई पट्टी के निकट घने जंगल में छुप गया। हेलिकाप्टर से इन हाथियों को कैंप से निकालने के सभी प्रयास विफल रहे क्योंकि घना जंगल न केवल उन्हें सुरक्षा प्रदान कर रहा था अपितु उनके छुपने के स्थान का पता लगाना भी लगभग असंभव था। इन हाथियों ने संचार-व्यवस्था बिजली के तारों, हवाई मैदान की बत्तियों तथा सुरक्षा तार बाड़ को अत्यधिक नुकसान पहुंचाया। चूंकि ये हाथी हवाई पट्टी के काफी नजदीक थे इसलिए वायुयान उड़ानों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। 20 सितम्बर, 1993 को यह निर्णय लिया गया कि उन्हें वहां से हांक कर बाहर निकाला जाए। यह कार्य तत्कालीन स्टेशन सुरक्षा अधिकारी स्क्वाड्रन लीडर मेहता को सौंपा गया। इस कार्य के लिए उन्हें 35 व्यक्ति दिए गए। यह दल लगभग 09.30 बजे राइफलें और ढोल-नगाड़े साथ लेकर पूर्व दिशा से घने जंगल में घुसा। इस दल ने 11.30 बजे तक जंगल का लगभग 3/4 क्षेत्र छानकर इस झुंड का दूसरे छोर तक पीछा किया। स्क्वाड्रन लीडर मेहता इस पूरी कार्रवाई में अपने साथियों का नेतृत्व कर उन्हें लगातार प्रोत्साहित करते रहे। लगभग 11.30 बजे एक हाथी ने अचानक इन पर हमला कर इन्हें जमीन पर पटक दिया। इस आघात के बावजूद स्क्वाड्रन लीडर मेहता अपना धैर्य नहीं खोया और स्वयं को उस दिशा से हटाया जिससे हाथी आक्रमण कर रहा था। इस मुकाबले में उस हाथी ने वहां से हटने से पूर्व स्क्वाड्रन लीडर मेहता की बांई जांघ बुरी तरह कुचल डाली। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वे लगभग 20 फुट तक रेंगकर गए और अपना पोर्टोफोन उठाकर अपने गस्ती दल से हाथियों के झुंड को वहां से बाहर हांकने का निर्देश दिया। यह कार्य पूरा होने पर ही उन्होंने दल के सदस्यों को अपने बचाव के लिए बुलाया। स्क्वाड्रन लीडर मेहता का प्राथमिक उपचार किए जाने के बाद उन्हें स्थानीय बेस अस्पताल पहुंचाया गया और बाद में महाशल्य चिकित्सा (मेजर सर्जरी) के लिए उन्हें वहां से पूर्व कमान अस्पताल कलकत्ता ले जाया गया।

इस प्रकार स्क्वाड्रन लीडर राज शेखर मेहता ने साहस, दृढ़निश्चय, पहल-शक्ति तथा उत्कृष्ट नेतृत्व के गुणों का परिचय दिया।

4. जे० सी०—181906 नायब सूबेदार केशर सिंह, असम राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 05-11-93)

नायब सूबेदार केशर सिंह के नेतृत्व में 18 अन्य रैंकों वाला एक छापामार दल एक गुप्त सूचना प्राप्त होने पर 05 नवम्बर, 1993 को 0300 बजे मिजोरम के दक्षिणी भाग में भूमिगत विद्रोहियों के छुपने के स्थान की ओर चला। यह दल 0600 बजे विद्रोहियों के छुपने के स्थान के निकट पहुंचा और उन पर धावा बोलने से पूर्व उन्होंने अंतिम रूप से विचार विमर्श किया। विद्रोहियों के छुपने का यह स्थान खेती क्षेत्र की दो झुग्गियों में था। नायब सूबेदार केशर सिंह ने अपने अगल-बगल कई अवरोधक लगाए और विद्रोहियों के छुपने के स्थान की ओर बढ़ते हुए स्वयं भी अपने दल का नेतृत्व किया और एक भूमिगत विद्रोही को अपने काबू में लेने का प्रयास किया जो हथियार सहित अचानक ही झुग्गी से बाहर आ गया। इस हाथापाई में उस भूमिगत विद्रोही ने अपने हथियार से गोली चला दी जो नायब सूबेदार केशर सिंह की गर्दन में लगी जिससे उनकी तत्काल मृत्यु हो गई। नायब सूबेदार केशर सिंह के अथक प्रयासों सुदृढ़ योजना तथा उच्च कोटि के नेतृत्व के कारण ही यह कार्य सफलता-पूर्वक पूरा हो पाया। इस कार्रवाई में दो भूमिगत विद्रोही मारे गए और दो एसाल्ट राइफलें, गोलाबारूद तथा 6 उन्नत किस्म के विस्फोटक यंत्र भी बरामद किए गए।

इस प्रकार नायब सूबेदार केशर सिंह ने अदम्य साहस तथा आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया।

5. जे० सी०—102605 नायब सूबेदार भगवती प्रसाद, असम राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27-12-93)

नायब सूबेदार भगवती प्रसाद को 27 दिसंबर 1993 को 20 अन्य रैंकों को साथ लेकर नागालैंड में लोंगखीम चौकी के पास एक चल नियंत्रक चौकी स्थापित करने का आदेश दिया गया था तदनुसार उन्होंने अपने दल को साथ लेकर मोकोचंग तयुनसंग सड़क पर 18.00 बजे तक चल नियंत्रक चौकी स्थापित करने के लिए विस्तृत टोह लेने के बाद सामरिक दृष्टि से सुरक्षित स्थान चुन लिया।

लगभग 20.40 बजे मोकोचंग की ओर से दो वाहन (एक टाटा ट्रक तथा एक जीप) चल नियंत्रण

चौकी के पास पहुंचे। इन वाहनों में लगभग 15 विद्रोही सवार थे। जब उन्हें रुकने के लिए कहा गया तो उन्होंने गोली-बारी कर नियंत्रण चौकी पर हमला बोल दिया। नायब सूबेदार भगवती प्रसाद ने स्थिति का जायजा लिया और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना अपने साथियों को प्रेरणा करते हुए स्वचालित हथियार चला रहे विद्रोहियों से कारगर ढंग से निपटने के लिए दृढ़निश्चय तथा साहस के साथ त्वरित गति कार्रवाई की। इनके इस प्रेरणा-प्रद नेतृत्व से प्रेरित होकर इनके साथी सैनिकों ने अत्यंत प्रभावकारी ढंग से जवाबी कार्रवाई की। इस कार्रवाई में इन्होंने दृढ़निश्चय से लड़ते हुए पांच विद्रोहियों को मार गिराया तथा एक को पकड़ लिया। इन्होंने बड़ी मात्रा में गोलाबारूद सहित छह राइफलें भी जब्त कीं।

इस प्रकार नायब सूबेदार भगवती प्रसाद ने साहस, दृढ़निश्चय, पहलशक्ति तथा उच्चकोटि के नेतृत्व के गुणों का परिचय दिया।

6. मेजर भूपेन्द्र सिंह (आई० सी०-- 35016), इंजीनियर्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 04-1-94)

99 सड़क निर्माण कंपनी (ग्रेफ) के कमांडिंग अफसर मेजर भूपेन्द्र सिंह को जम्मू-कश्मीर में खुन्नाबल-पहलगांव मार्ग पर पांच दुर्गप्राचीर पुलों के निर्माण का काम सौंपा गया था। 04 जनवरी 1994 को मेजर भूपेन्द्र सिंह पुल-निर्माण स्थलों का निरीक्षण करने गए। अक्कर गांव में निरीक्षण दल की उन राष्ट्रविरोधी तत्वों से भिड़ंत हो गई जो सड़क की नाकेबंदी कर इस दल पर घात लगाकर हमला करने की ताक में बैठे थे। इस दल पर लगभग 100 राष्ट्रविरोधी तत्वों ने स्वचलित शस्त्रों से बहुत नजदीक से चारों तरफ से गोलीबारी की थी। तब मेजर भूपेन्द्र सिंह ने बड़ी सूझबूझ का परिचय देते हुए और समय नष्ट किए बिना अपने सैन्य-दल को जवाबी गोलीबारी करने में लगा दिया काफी देर तक हुई इस जवाबी गोलीबारी के पश्चात वे घात निष्फल करने, बंद रास्ता खोलने और अपने दल के सदस्यों को वहां से मुक्त कराकर आगे बढ़ने में सफल रहे। 17 जनवरी 1994 को जब वे जम्मू-कश्मीर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बनी बनिहाल सुरंग से बर्फ हटाकर अपने मुख्यालय को लौट रहे थे तो मार्ग में राष्ट्रविरोधी तत्वों ने उनका अपहरण कर लिया। बंदी रहने के दौरान मेजर भूपेन्द्र सिंह बचकर निकलने के लिए सतर्क रहे और 19 जनवरी 1994 को उन्होंने बंदीकर्ताओं में से एक की एके -47 राइफल छीन ली। इससे पहले कि वे फायर कर पाते, 10-12 बंदीकर्ता उन पर झपट पड़े और उन्हें बुरी तरह से घायल कर दिया। उसके बाद उन्हें बांधकर जगह-जगह ले जाया गया और 23 जनवरी 1994 को प्रातः गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई। इस प्रकार मेजर भूपेन्द्र सिंह ने अपने प्राण गंवाकर दृढ़ कर्तव्यनिष्ठा और अनुकरणीय साहस का परिचय दिया।

7. 2680419 ग्रेनेडियर्स करनैल सिंह ग्रेनेडियर्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 फरवरी, 1994)

10 फरवरी 1994 को 3 ग्रेनेडियर्स की एक प्लाटून को जम्मू कश्मीर में तुलाकोहाज गांव में विशेष खोज कार्य सौंपा गया था। ग्रेनेडियर्स करनैल सिंह लाइट मशीन गनर का कार्य कर रहे थे। लगभग 1400 बजे राजपुरा गांव के पास यह प्लाटून 6 से 8 राष्ट्रविरोधी तत्वों द्वारा ए के -47 तथा यूनिवर्सल मशीन गनों से की जा रही भारी गोलीबारी की चपेट में आ गई। ग्रेनेडियर करनैल सिंह ने तुरन्त जवाबी गोलीबारी की इस बीच विदेश के कुछ स्वार्थी तत्वों सहित 30 से 35 राष्ट्रविरोधी तत्व इन उग्रवादियों में आ मिले और इन्होंने आस पास की पहाड़ियों से स्वचालित शस्त्रों से भारी गोलीबारी करके प्लाटून को घेर लिया इतने अधिक राष्ट्रविरोधी तत्वों द्वारा स्वचालित शस्त्रों से की जा रही भारी और अचूक गोलीबारी तथा अन्य लाइट मशीन गन ग्रेनेडियर देसराज की मृत्यु होने के बावजूद ग्रेनेडियर करनैल सिंह अपनी लाइट मशीन गन को एक उपयुक्त ठिकाने से दूसरे उपयुक्त ठिकाने पर ले गए और इस प्रकार उन्होंने अपनी प्लाटून के अन्य साथियों पर पड़े दबाव को कम कर राष्ट्रविरोधी तत्वों की गोलीबारी को नाकाम कर दिया। यह गोलीबारी तीन घंटे तक चलती रही। ग्रेनेडियर करनैल सिंह तीसरी बार अपना ठिकाना बदल ही रहे थे कि इतने में उनके चेहरे पर गोली आ लगी जिससे वे वीर गति को प्राप्त हो गए। परंतु उनकी इस कार्रवाई से उनकी प्लाटून के अन्य सदस्य राष्ट्रविरोधी तत्वों की कारगर गोलीबारी से स्वयं का बचाव करने में सफल हो गए।

इस प्रकार ग्रेनेडियर करनैल सिंह ने अत्यंत विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए निर्भीकता और अदम्य साहस का परिचय दिया तथा देश की एकता और अखंडता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान कर दिया।

8. 3971557 हवलदार तारा चंद डोगरा (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 फरवरी 1994)

17 फरवरी, 1994 को जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले के बुदबुरा बारपुरा तथा मूला बागिल गांवों में कुछ सशस्त्र राष्ट्रविरोधी तत्वों के छिपे होने की सूचना मिलने पर वहां की घेराबंदी करके उन्हें बाहर निकालने की कार्रवाई की गई। सुबह लगभग 8 बजे जब स्थानापन्न प्लाटून कमांडर हवलदार

तारा चन्द अपने खोजी दल के साथ आसूरा मोहल्ले की दक्षिण दिशा के करीब से गुजर रहे थे तो वे एक मकान से हो रही गोलीबारी की चपेट में आ गए। हवलदार तारा चंद ने अपने दल को उस मकान को घेरने तथा उस पर कब्जा करने का आदेश दिया। उन्होंने गोलीबारी कर रहे राष्ट्र विरोधी तत्वों को रोकने का स्वयं भी प्रयास किया। इसी दौरान इनके दाएं पैर में गोली लगने से वे घायल हो गए। घायल होने के बावजूद वे वीरतापूर्वक उग्रवादियों से जूझते रहे। वे उस मकान में घुसे और गोली बारी कर रहे एक राष्ट्र विरोधी तत्व की ओर फुर्ती से मुड़ते हुए उस पर नजदीक से गोली चलाकर उसका काम तमाम कर दिया। इसी बीच उन्होंने देखा कि यूनिवर्सल मशीनगनों से लैस एक अन्य उग्रवादी मकान की पिछली खिड़की से सुरक्षित स्थान की ओर भाग रहा है। घायल होने के बावजूद हवलदार तारा चंद ने बड़े साहस और बहादुरी से उसका पीछा कर उसे मार गिराया। किन्तु पास के एक मकान में छिपे तीसरे उग्रवादी ने उनके सीने में गोली मार दी जिससे उनकी तत्काल मृत्यु हो गई।

इस प्रकार हवलदार तारा चंद ने निश्चय, अनुकरणीय नेतृत्व तथा आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया।

9. 13689178 गार्ड्समैन ताइयेनजम देवन सिंह, गार्ड्स
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 2 मार्च, 1994)

27 राजपूत को 5 गार्ड्स की एक कंपनी समेत जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में सोपोर के दक्षिणी क्षेत्र के चारों ओर घेरा डालने का काम सौंपा गया था। 5 गार्ड्स की "डी" कंपनी को हाथीशाह मोहल्ले की घेराबंदी का कार्य दिया गया था जिसकी गलियां अत्यंत तंग और संकरी थीं।

इस कंपनी ने संकरी गलियां होने के बावजूद घेराबंदी का काम शुरू कर दिया। यह कम्पनी जिसमें नायब सूबेदार जयंत सिंह, नायक सोबी चंद तथा गार्ड्समैन ताइयेनजम देवन सिंह शामिल थे, घेराबंदी का काम पूरा कर ही रही थी कि गुप्तचरी का कार्य कर रहे गार्डसमैन ताइयेनजम देवन सिंह ने कुछ महिलाओं को मकान से बाहर आते देखा। उनके सुनियोजित नापाक इरादे को भांपे बिना गार्ड्समैन ताइयेनजम ने रास्ता तंग होने के कारण उन महिलाओं को मकान से नीचे उतरने दिया। मकान के प्रवेश द्वार पर उन महिलाओं के पीछे छिपे हुए राष्ट्रविरोधी तत्वों ने निकट से गार्ड्समैन ताइयेनजम के पेट में गोली मारकर उन्हें घायल कर दिया।

गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वे गोलियों की जद से बाहर निकले और महिलाओं की सुरक्षा का पर्याप्त ध्यान रखकर उग्रवादियों को गोलीबारी में उलझाए रखा। उनमें से एक को गोली मार दी इसके बाद उन्होंने घायल उग्रवादी का मकान के भीतर तक पीछा किया और उस पर गोली चलाकर उसे मार गिराया। यह देखकर शेष राष्ट्रविरोधी तत्व हतोत्साहित हो गए और घायल उग्रवादी को छोड़कर भाग खड़े हुए। तत्पश्चात गार्ड्समैन ताइयेनजम देवन सिंह बेहोश होकर गिर पड़े। उनका तुरंत प्राथमिक उपचार करके उन्हें हेलिकॉप्टर से बेस अस्पताल पहुंचाया गया परन्तु घावों के कारण उन्होंने दम तोड़ दिया।

इस प्रकार गार्ड्समैन ताइयेनजम देवन सिंह ने राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करने में शौर्य, कर्तव्य निष्ठा का परिचय देते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान कर दिया।

10. जी/155977एफ अधीक्षक बी/आर ग्रेड श्री श्री कुमार

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 13.3.94)

अधीक्षक श्री श्री कुमार को टाटे—मनभूका सड़क पर चट्टान की कटाई करने के कार्य पर तैनात किया गया था। 13 मार्च, 1994 को रात के लगभग साढ़े दस बजे श्री श्री कुमार जिस समय सहायक इंजीनियर श्री आर एन० सिंह के कार्यालय एवं निवास स्थान पर मौजूद थे तभी सशस्त्र डाकू सरकारी धन लूटने के इरादे से कैम्प में घुस आए। उन्होंने श्री श्री कुमार का दरवाजा खटखटाया। खतरा भांपते हुए इन्होंने सावधानीपूर्वक दरवाजा खोला और देखा कि लगभग 4-5 सशस्त्र डाकू बाहर खड़े हैं। वे स्थानीय आदिवासी प्रतीत होते थे जो 12 बोर की बंदूकें लिए हुए थे। डाकुओं ने कमरे में अंदर घुसने के उद्देश्य से उन्हें एक ओर धकेल दिया। श्री श्री कुमार ने बहादुरी से मुकाबला करते हुए उन्हें अन्दर घुसने से रोका और सहायता के लिए चिल्लाए। इस हाथापाई में एक डाकू ने अत्यंत निकट से इन पर गोली चलाकर इनकी दाईं जांघ को बुरी तरह से जख्मी कर दिया। श्री श्री कुमार ने अपने जान और जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए अपनी लड़ाई जारी रखी। वह डाकुओं को अपने कमरे से बाहर धकेलने में सफल हो गए। इसी दौरान इनकी पुकार और गोली की आवाज सुनकर श्री आर० एन० सिंह तथा अन्य साथी इनके कमरे की ओर दौड़े। उस समय तक डाकू वहां से भाग चुके थे।

इस प्रकार श्री श्री कुमार ने शौर्य कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए सशस्त्र डाकुओं के गिरोह द्वारा सरकारी धन लूटे जाने से बचाने में सफलता प्राप्त की।

11. कर्नल अजीत सिंह (आई० सी०-32135) मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—14.03.94)

कर्नल अजीत सिंह जब 14 मार्च, 1994 को समगुरिंग दीमापुर, नागालैण्ड से अपने बटालियन मुख्यालय को लौट रहे थे तो लगभग अठारह भूमिगत उग्रवादियों ने उन पर अत्यन्त निकट से घात लगाकर भारी गोलीबारी की, कर्नल अजीत सिंह के अपने अंगरक्षकों को एकत्र कर भूमिगत उग्रवादियों पर जवाबी हमला किया। इस हमले में इनकी दाहिनी जांघ में गोली लग जाने से ये घायल हो गए। घायल होने की परवाह किए बिना ये अपनी दाहिनी बांह पर दोबारा गोली लगने

से घायल होने तक गोलीबारी करते रहे । इनके अंगरक्षकों ने इन्हें आगे बढ़ने के लिए मना किया परन्तु ये भूमिगत उग्रवादियों के वहां से भाग जाने तक आगे बढ़ते रहे । जवाबी गोलीबारी के दौरान भूमिगत उग्रवादी अंधेरे का फायदा उठाकर बच निकले। कर्नल जीत सिंह द्वारा की गई कार्रवाई से समूचे वाहन दस्ते तथा उन वाहनों पर सवार सैनिकों की जान बच गई । कर्नल अजीत सिंह को गंभीर हालत में अस्पताल पहुंचाया गया । बाद में भूमिगत उग्रवादियों ने दैनिक समाचारपत्रों में अपनी रिपोर्ट प्रकाशित कराकर कर्नल अजीत सिंह के घायल होने / मारे जाने के बारे में प्रसन्नता व्यक्त की पर कर्नल अजीत सिंह की त्वरित कार्रवाई के कारण इन पर किए गए घातक हमले में ये बाल-बाल बच गए और सैन्य दस्ते को भी अधिक नुकसान नहीं उठाना पड़ा ।

इस प्रकार कर्नल अजीत सिंह ने प्रेरक नेतृत्व एवं शौर्य तथा अति असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

12. कैप्टन प्रदीप भाटिया (आई० सी० -43872), महार

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15-3-94)

15 मार्च, 1994 को कैप्टन प्रदीप भाटिया को सोमालिया में नं० 2 आइरिश आर्मी ट्रांसपोर्ट कम्पनी के संभारिकी सैन्य दस्ते की मार्ग रक्षा के लिए एक प्लाटून का प्रभारी बनाकर भेजा गया था । जब यह दस्ता मोगादिशु से बैदोआ में लगभग 250 कि० मी० की दूरी पर पहुंचा तो इस पर सोमालियाई देशद्रोहियों के एक बड़े दल ने घात लगाकर हमला कर दिया । युद्ध का पूर्वाभ्यास करने के बाद अग्रगामी वाहन दस्ते ने दक्षिण की ओर स्थित देशद्रोहियों के ठिकानों पर धावा बोला । कैप्टन भाटिया ने दाहिनी ओर से मुड़कर आक्रमण करने की कोशिश की ताकि अग्रगामी दल पर दक्षिण दिशा की ओर जो दबाव है उसे कम किया जा सके। कैप्टन भाटिया के सैन्यदल पर देशद्रोहियों द्वारा की जा रही गोलियों की बौछार के बावजूद इनका यह प्रयास सफल रहा । इन्होंने, दुश्मन की गोलीबारी का दबाव कम करने के उद्देश्य से अपनी मीडियम मशीनगन के तोपची को गोलीबारी करने का आदेश दिया और तेज रफ्तार से चल रहे "निशान वाहन" जिस पर इनका सैन्यदल सवार था, की खिड़की से झुककर स्वयं गोलीबारी करके दुश्मन की अचूक गोलीबारी पर काबू पा लिया । दुश्मन के नजदीक पहुंचते ही ये वाहन से कूद पड़े और इन्होंने भारी मशीनगन से गोलीबारी कर ए के-47 राइफल से गोलीबारी कर रहे दुश्मन के मुख्य तोपची को मार गिराया । इतने में जैसे ही दुश्मन के दूसरे ने तोपची मारे गए तोपची का स्थान लेने की कोशिश की, कैप्टन भाटिया ने उस पर झपट पड़े और इन्होंने अपनी राइफल के बट से उस पर प्रहार कर उसे अचेत कर दिया । परंतु ये स्वयं भीषण गोलीबारी की चपेट में आ गए । इसके बावजूद ये गोलीबारी करते रहे और इन्होंने एक देशद्रोही को मार गिराया तथा अपने हथियार एक देशद्रोही को घायल भी कर दिया – देशद्रोहियों द्वारा घात लगाकर किए गए हमले के जवाब में कैप्टन भाटिया के नेतृत्व में निरन्तर किए गए हमले से पराजित होकर देशद्रोही घुम दबाकर जंगल की ओर भाग गए। इस मुठभेड़ में 15 देशद्रोही मारे गए और 20 पकड़े गए तथा भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद किया गया ।

इस प्रकार कैप्टन प्रदीप भाटिया ने सोमालिया के देशद्रोहियों मुकाबला करने में वीरता, साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

13. जे० सी०-155781 सूबेदार धर्म सिंह, महार

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15.3.94 )

15 मार्च, 1994 को सूबेदार धर्म सिंह नम्बर 2 आरिश आर्मी ट्रांसपोर्ट कम्पनी लाजिस्टिक क़ॉन्वाय के साथ चल रहे मार्ग रक्षक दल में शामिल थे । जिस समय यह क़ॉन्वाय मोगादिशु से बैडोआ जा रही थी जोकि लगभग 250 कि० मी० की दूरी पर था तभी शेरी गांव के निकट सोमाली उग्रवादियों के क़ॉन्वाय पर घात लगाकर हमला किया । सूबेदार धर्म सिंह का दल पूर्व निर्धारित स्थान से भारी मात्रा में की जा रही गोली-बारी के कारण आगे नहीं बढ़ सकी। इन्होंने ए के-47 राइफल से लैस एक उग्रवादी को मार गिराया और जैसे ही यह उग्रवादियों के दल पर जोकि बहुत ही कम दूरी पर था गोली चलाने ही वाले थे कि इनकी मैगजीन खाली हो गई । स्थिति से तनिक भी विचलित हुए बिना और हथगोले का प्रयोग करने के खतरे को भांपते हुए इन्होंने भागते हुए उग्रवादियों पर अचेत कर देने वाला एक हथगोला फैंका । उनकी अचेत अवस्था का लाभ उठाते हुए ये आगे बढ़े और सबसे नजदीक उग्रवादी के ऊपर कूद कर उसे काबू में कर लिया और उससे जी 3 ए 3 स्वचालित राइफल छीन ली उसके बाद ये तेजी से आगे बढ़े और बगल से हल्की मशीन गन से की जा रही गोलीबारी का लाभ उठाते हुए उग्रवादियों पर धावा बोल दिया । इस हमले में इन्होंने दो और सशस्त्र उग्रवादियों को पकड़ लिया जिनमें से एक घायल हो चुका था ।

इस प्रकार सूबेदार धर्म सिंह ने सोमाली उग्रवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए असाधारण शौर्य और अदम्य उत्साह का परिचय दिया ।

14. 2874983 नायक चंद्रपाल सिंह, राजपूताना राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 मार्च, 1994)

15 मार्च, 1994 को जम्मू कश्मीर के अनंतनाग जिले में स्थित तुलबल्लान गांव में घेराबन्दी करके तलाशी लेने की कार्रवाई की गई थी । इस कार्रवाई में एक कंपनी को गांव के पश्चिमी छोर में मकानों की तलाशी लेने का काम सौंपा गया था ।

तलाशी लेते-लेते नायक चंद्रपाल सिंह ने एक मकान के फर्श के नीचे छिपने के लिए बनाए गए ठिकाने तथा दीवार-अलमारी के तल से वहां तक जाने वाले मार्ग का पता लगा लिया ।

जैसे ही नायक चंद्रपाल ने उस ठिकाने का तख्ता उठाया उसमें से एक राष्ट्रविरोधी तत्व ने बाहर आकर कमरे में एक हथगोला फेंका और नायक चंद्रपाल सिंह पर गोली चला दी। हथगोले के टुकड़ों तथा गोली से घावों के कारण नायक चंद्रपाल सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए और उनके घावों से अत्यधिक खून बहना शुरू हो गया परन्तु इसके बावजूद वे अन्य साथी सैनिकों को उस कमरे से बाहर जाने के लिए सुरक्षा प्रदान करते रहे । जैसे ही वह राष्ट्रविरोधी सैनिकों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए अपने ठिकाने से दुबारा बाहर निकला कि गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद नायक चंद्रपाल सिंह ने निडर और निर्भीक होकर उनका काम तमाम कर दिया। इस कार्यवाही में मारे गए उग्रवादी से एक राइफल, चार मैगजीनें तथा एक सौ बीस अदद गोलाबारूद बरामद हुआ ।

इस प्रकार चंद्रपाल सिंह ने राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करने में असाधारण वीरता एवं शौर्य का परिचय देते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान कर दिया ।

15. मेजर रत्न कुमार सेन (आई० सी०-36375), कवचित रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17-03-94)

17 मार्च 1994 को 2 राष्ट्रीय राइफल के स्थानापन्न कमांडिंग अफसर के रूप में कार्य करते हुए मेजर रत्न कुमार सेन को 1 सेक्टर राष्ट्रीय राइफल के मुख्यालय से सूचना मिली कि जम्मू कश्मीर में अनंतनाग कस्बे में स्थित अशासपुर उपग्रह केन्द्र के समीप विदेशी स्वार्थी तत्वों ने सीमा सुरक्षा बल की 96 बटालियन को घात लगाकर घेर लिया है। यह सूचना मिलते ही मेजर रत्न कुमार सेन पूरी बटालियन को प्रेरित कर घटना-स्थल की ओर दौड़ पड़े। इन्होंने घात में फंसे सीमा सुरक्षाबल के जवानों को मुक्त कराकर उन्हें उनके स्थायी ठिकाने पर पहुंचाया और हताहतों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने में भी सहायता की । परन्तु लौटते समय लीडिंग प्लाटून, अनंत नाग कस्बे में जंगलात मंडी और अछाबल बस स्टैंड पर राष्ट्रविरोधी तत्वों द्वारा की गई भारी गोलाबारी की चपेट में आ गई । सारे सैनिक भीषण गोलीबारी से प्रभावित हो गए और आगे नहीं बढ़ सके। मेजर रत्न कुमार सेन द्वारा संचालित प्लाटून ही, भीषण एवं सटीक गोलीबारी की चपेट से आए सैनिकों को मुक्त कराने के लिए अछाबल बस स्टैंड तक जा पाई । मेजर सेन रेंग कर आगे जा रहे सैनिकों की ओर बढ़े और स्वचालित शस्त्रों से संकटापन्न क्षेत्र से गोलीबारी करने लगे । इन्होंने दबाव डालने के उद्देश्य से राष्ट्रविरोधी तत्वों पर हथगोले फेंके। मेजर रत्न कुमार सेन अपने सैनिकों का नेतृत्व करते हुए एक सुरक्षित स्थान से दूसरे स्थान पर 15 से 20 मीटर की दूरी तक ही पहुंच पाए थे कि भारी गोलीबारी की चपेट से आ गए। इतने में एक राष्ट्रविरोधी ने छिपकर गोली चला दी जो इनकी कनपटी से आ लगी जिससे ये नीचे गिर पड़े परन्तु ये रेंगकर सुरक्षित स्थान पर पहुंच गए । ये बेहोश होने तक रेंग कर गोलीबारी करते रहे बाद में इन्हें एक सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया ।

इस प्रकार मेजर रत्न कुमार सेन ने दृढ़-इच्छाशक्ति समर्पण भावना, साहस और अति असाधारण कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

16. जीओ-1878 डब्ल्यू० सहायक अभियंता (सिविल) दिनेश चन्द्र सरकार (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19-03-94

सहायक अभियंता (सिविल) दिनेश चन्द्र सरकार को लेह के दक्षिण-पूर्व में स्थित कारु तांगसे सड़क के रख-रखाव और उस सड़क से बर्फ हटाने के कार्य के प्रभारी अधिकारी के रूप में तैनात किया गया था। चांगला घाटी से होकर गुजरने वाली 17350 फुट की ऊंचाई पर बनी यह सड़क भारत-चीन सीमा तक आने-जाने का एक एकमात्र साधन है ।

19 मार्च, 1994 को भारी हिमपात और बर्फ के जमाव के कारण कि० मी० 43 से 47 के बीच की सड़क अवरुद्ध हो गई । जनरल रिजर्व इंजीनियरी बल के कार्मिकों और श्रमिकों को दो डोजरों के जरिए बर्फ हटाने के काम पर लगाया गया था । इस स्थान पर हिमस्खलन होने की संभावनाएं बहुत अधिक रहती थीं फिर भी श्री सरकार ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा को होने वाले खतरे की परवाह न कर हुए बर्फ हटाने के कार्य का नेतृत्व करने का निर्णय लिया ।

अपराह्न लगभग 4 बजकर 10 मिनट पर कि० मी० 46 के निकट पर्वत की चोटी से भारी हिमस्खलन हुआ और 150 से 200 मीटर के क्षेत्र में फैल गया । श्री सरकार उस समय खिसक कर गिरे हिमखंडों के पास ही थे । जनरल रिजर्व इंजीनियरी बल के कार्मिकों और दिहाड़ी श्रमिकों को उस सारे क्षेत्र में तैनात कर दिया गया था जहां से बर्फ हटाई जानी थी । श्री सरकार ने जैसे ही हिमस्खलन की चेतावनी सुनी वे दौड़कर खुद से कुछ ही फुट की दूरी पर स्थित सुरक्षित स्थान पर पहुंचने की बजाए अपने कार्य-दल को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए उनकी ओर दौड़े । इस प्रक्रिया में वे हिमस्खलन से गिरी बर्फ के नीचे दब गए हालांकि उनके इस आत्मबलिदान में वे अपने दल के अन्य सदस्यों का जीवन बचाने में सफल रहे ।

इस प्रकार सहायक अभियंता (सिविल) दिनेश चन्द्र सरकार ने अपने दल के अन्य सदस्यों के जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करने में अपना कर्तव्य पालन करते हुए सर्वोच्च बलिदान किया ।

17. जी 170948 के,
ओवरसियर प्यारे लाल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 मार्च, 1994)

ओवरसियर प्यारे लाल को लेह के दक्षिण-पूर्व में बनी कारू–तांगत्से सड़क पर बर्फ हटाने के लिए कार्य प्रभारी के रूप में तैनात किया गया था । यह सड़क भारत–चीन सीमा तक आने-जाने का एकमात्र साधन है जोकि 17350 फुट की उंचाई पर चांगला घाटी से होकर गुजरती है ।

19 मार्च, 1994 को भारी हिमपात और बर्फ के जमाव के कारण कि० मी० 43 से 47 के बीच की सड़क अवरूद्ध हो गई । बर्फ हटाने के काम पर जनरल रिजर्व इंजीनियरी बल के कार्मिकों और श्रमिकों सहित दो डोजर तैनात किए गए थे । जहां से बर्फ हटाई जानी थी उस क्षेत्र में बर्फ के भारी जमाव की अत्यधिक संभावनाएं बनी रहती हैं जहां हवा चलने से लगातार बर्फ का जमाव होता रहता है इसलिए वहां डोजर चलाना चुनौतीपूर्ण हो गया था । श्री प्यारे लाल अदम्य उत्साह का परिचय देते हुए उस डोजर पर चढ़ गए जिसे शहाबुद्दीन अंसारी चला रहे थे और शीघ्रतापूर्वक बर्फ हटाने के लिए उन्हें निर्देश देने लगे ।

अपराह्न लगभग चार बजकर दस मिनट पर कि० मी० 46 के निकट बर्फ हटाने का कार्य चल रहा था तो पहाड़ की चोटी से एक भारी हिमस्खलन हुआ । श्री प्यारे लाल सुरक्षित स्थान की ओर भागने की बजाए चालक को निदेश देते रहे कि वह डोजर को सुरक्षित स्थान पर ले जाए । वे निर्भीकता से डोजर के संचालक और डोजर को उस स्थान से दूर हटाने मे सफल रहे जहां पर अधिक हिमस्खलन हो रहा था । हालांकि डोजर 100 फुट नीचे खिसक गया था परन्तु उसमें कोई बड़ी क्षति नहीं हुई । परन्तु इस प्रक्रिया में श्री प्यारे लाल हिमस्खलन की चपेट में आ गए और बर्फ के नीचे दबने से उनकी मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार ओवरसियर प्यारे लाल ने असाधारण शौर्य एवं निस्वार्थ सेवा का परिचय दिया और कर्तव्य पालन करते हुए अपने जीवन का उच्चतम बलिदान किया ।

18. जी/सं० 172411 के,
आपरेटर उत्खनन मशीनरी,
शहाबुद्दीन अंसारी

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 मार्च, 1994)

आपरेटर उत्खनन मशीनरी, शहाबुद्दीन अंसारी को लेह के दक्षिण-पूर्व में कारू–तांगत्से (के० टी०) मार्ग से अपने डोजर की सहायता से बर्फ हटाने के काम पर तैनात किया गया था । भारत चीन सीमा तक आने-जाने के लिए केवल यही एक मार्ग है जोकि 17350 फुट की ऊंचाई से चांगला दर्रे से होकर गुजरता है तथा इस मार्ग को भीषण सर्दी के मौसम में भी खुला रखना होता है ।

19 मार्च, 1994 को भारी हिमपात और बर्फ के जमाव के कारण कि० मी० 43 और कि० मी० 47 के बीच का के० टी० मार्ग अवरूद्ध हो गया लगभग चार बजकर दस मिनट पर जब कि० मी० 46 के निकट बर्फ हटाने का कार्य किया जा रहा था तभी अचानक पहाड़ की चोटी से एक विशाल हिमखंड नीचे की ओर खिसका । हिमस्खलन की चेतावनी मिलने के बावजूद आपरेटर उत्खनन मशीनरी, शहाबुद्दीन अंसारी ने न तो अपना डोजर छोड़ा और न ही अपनी सुरक्षा के लिए वहां से हटे । वे निर्भयतापूर्वक डोजर को किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए ओवरसियर प्यारे लाल के निर्देशानुसार उसका प्रचालन करते रहे । ऊपर से गिरी बर्फ की मात्रा बहुत अधिक होने के कारण उस खतरनाक क्षेत्र से बर्फ हटाना इनके लिए और भी कठिन हो गया । इसी दौरान ऊपर से गिरते हिमखंड डोजर से टकराए हालांकि उनकी तेजी सामान्य थी और दिशा-निर्देश दे रहे ओवरसियर प्यारे लाल को दूर फेंक दिया । इस स्थिति में भी आपरेटर उत्खनन मशीनरी शहाबुद्दीन ने डोजर को नहीं छोड़ा और उसे घाटी की ओर मोड़ दिया । डोजर घाटी में लगभग 100 फुट नीचे टकरा गया और आपरेटर शहाबुद्दीन अंसारी दूर जा गिरे परन्तु सौभाग्यवश इन्हें मामूली चोटें आई ।

इस प्रकार आपरेटर उत्खनन मशीनरी, शहाबुद्दीन अंसारी ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए सरकारी सम्पत्ति को बचाने में शौर्य का प्रदर्शन किया ।

19. 4254834 लांस हवलदार थियोफिल तिरु, बिहार, (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 28 मार्च, 1994)

28 मार्च, 1994 को लांस हवलदार थियोफिल तिरु को अपने साथी लांस नायक बीकाराम टुडु के साथ सोमालिया में "यूनोसोम–II सैन्य कार्रवाई" के हिस्से के रूप में किस्मायु कस्बे के दक्षिण में स्थित सामरिक महत्व के बन्दरगाह में राहत कार्य को समन्वित करने के लिए भेजे गए यूनिसेफ वाहन की मार्गरक्षा कार्य सौंपा गया था । जब यह वाहन एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहा था तो शस्त्रों से लैस सोमालिया के दो विद्रोहियों ने इसे रुकने के लिए संकेत दिया । यूनिसेफ कार्मिकों को होने वाले खतरे को भांपकर लांस हवलदार थियोफिल तिरु विद्रोहियों को ललकारने के लिए धीरे-धीरे रुक रहे वाहन से कूद पड़े । ठीक उसी समय यह वाहन सोमालिया के शस्त्रों से लैस 12 से 14 विद्रोहियों द्वारा तीन तरफ से की जा रही गोलीबारी की चपेट में आ गया । इस गोलीबारी से लांस हवलदार थियोफिल तिरु की

जांघ में गोली लग गई। उनके साथी लांस नायक बीकाराम टुडु ने भी जबाबी गोलीबारी की परन्तु वे दुश्मन की गोलियों की बौछार से घायल होकर नीचे गिर पड़े। लांस हवलदार थियोफिल तिरु ने अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किये बिना सोमालिया के सशस्त्र विद्रोहियों को कारगर गोलीबारी में उलझाए रखकर उनके नापाक इरादों पर पानी फेर दिया। परन्तु यदि लांस हवलदार थियोफिल तिरु के जबड़े तथा सिर में गोली लगने से उनकी मृत्यु न हुई होती तो सोमालिया के विद्रोही भारत के उस वीर सैनिक के चंगुल से बच नहीं पाते ।

इस प्रकार, लांस हवलदार थियोफिल तिरु ने वीरता, साहस, कर्तव्यनिष्ठा तथा आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया ।

20. जी/172033 डब्ल्यू० ओ० ई० एम० सुरेन्द्र सिंह

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 4 अप्रैल, 1994)

उत्खनन मशीनरी आपरेटर, सुरेन्द्र सिंह को लेह-चालुंका मार्ग पर कि० मी० 32 पर बर्फ हटाने के काम पर डोजर आपरेटर के रूप तैनात किया गया था । लेह-चालुंका मार्ग विश्व का सब से अधिक ऊंचाई पर बना मोटर-गाड़ी मार्ग है और यह सियाचिन ग्लेशियर, काराकोरम दर्रे और शाइओक घाटी में तैनात भारतीय सैनिकों के जीवन का एकमात्र आधार है ।

4 अप्रैल, 1994 को रात के समय लेह-चालुंका मार्ग पर कि० मी० 25 और कि० मी० 39 के बीच के क्षेत्र में भारी हिमपात हुआ जिसके परिणामस्वरूप सड़क पर 8 से 10 फुट तक बर्फ जम गई। लगभग 20 से 25 तक सैन्य और सिविल वाहन उस क्षेत्र में फंस गए । इन वाहनों में सैनिक और सिविलियन सवार थे। ओ० ई० एम० सुरेन्द्र सिंह को अपने डोजर की सहायता से सड़क से बर्फ हटाने का आदेश दिया गया। इन्होंने अपने डोजर को काम पर लगा दिया और वे तेज हवा, प्रतिकूल मौसम और जान को जोखिम में डालते हुए सड़क से बर्फ हटाने में जुट गए। तभी अचानक एक विशाल हिमखंड पहाड़ी की चोटी से फिसल कर नीचे गिरा और डोजर तथा वे स्वयं गर्दन तक बर्फ में दब गए । ओ० ई० एम० सुरेन्द्र सिंह को उनके सहायकों ने तत्काल बर्फ में से बाहर निकाला और इन्हें आराम करने तथा चिकित्सा सहायता लेने की सलाह दी। उन्होंने उस सलाह की ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया और आसन्न हिमस्खलन के खतरे के बावजूद डोजर से बर्फ हटाने में लगे रहे ताकि मार्ग में फंसे हुए वाहनों और लोगों के आने जाने के लिए सड़क साफ की जा सके। ओ० ई० एम० सुरेन्द्र सिंह ने पूरा मार्ग 24 घण्टे में साफ कर दिया ।

इस प्रकार ओ० ई० एम० सुरेन्द्र सिंह ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए साहस, दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

21. जी० ओ०–2364 एल० सहायक अभियंता (सिविल) मनोहर दत्त बवाड़ी ।

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 अप्रैल, 1994)

सहायक अभियंता (सिविल) मनोहर दत्त बवाड़ी को उत्तरी सिक्किम में सांकलंग–तूंग सड़क पर चट्टान की कटाई के कार्य के प्रभारी अधिकारी के रूप में तैनात किया गया था ।

15 अप्रैल, 1994 को श्री बवाड़ी एक ऐसे स्थान पर विस्फोट कार्यों की देख-रेख कर रहे थे जहां पर खड़ी चट्टान और गहरे खड्ड थे। पहाड़ी चट्टान के अग्रभाग का विस्फोट करने के लिए जब वे स्वयं रिंग मेन सर्किट तैयार कर रहे थे तो लगभग दस बजकर पैंतालीस मिनट पर पहाड़ी के ऊपर से कुछ शिलाखंड नीचे की ओर लुढकने लगे । नीचे गिरते पत्थरों और शिलाखंडों के खतरे की परवाह न करते हुए श्री बवाड़ी ने अपने कर्मचारियों को चेतावनी देते हुए सुरक्षित स्थान पर चले जाने को कहा जबकि अपनी स्वयं की सुरक्षा की तनिक भी चिंता न करते हुए वे अपना काम पूरा करने में लगे रहे । अचानक एक बड़ा शिलाखंड फिसलकर सीधे उन पर आ गिरा जिससे वे जिंदा भूमि के नीचे दब गए और सिर में गंभीर चोटें आने से उनकी तत्काल मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार, सहायक अभियंता (सिविल) मनोहर दत्त बवाड़ी ने उत्तरदायित्व की उच्चतम भावना व असाधारण वीरता नेतृत्व संबंधी वैयक्तिक गुणों का परिचय दिया और अपने कर्तव्य का पालन करते हुए सीमा सड़क विकास संगठन की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुरूप अपने जीवन का बलिदान किया ।

22. कैप्टन राजीव कुमार जून (आई सी–50443) ग्रेनेडियर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16–4–94)

स्थानापन्न कंपनी कमांडर कैप्टन राजीव कुमार जून ने 16 अप्रैल, 1994 को जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले में किल्लर और थ्यारिन समेत कांडी क्षेत्र में सैन्य कार्रवाई के दौरान आतंकवादियों के छिपने के एक संदिग्ध स्थान पर छापा मारा। जैसे ही इनका सैन्यदल उस स्थान पर पहुंचा इतने में दो उग्रवादियों ने गोलियां चलाकर घनी हरियाली का फायदा उठाते हुए बच निकलने की कोशिश की। कैप्टन राजीव कुमार जून ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की जरा भी परवाह किए बिना पीछे से तुरंत हमला कर उनका बचाव-मार्ग अवरुद्ध कर दिया । उग्रवादी समीपवर्ती नाले में फंस गए परन्तु उन्होंने फिर भी शिलाखण्डों की ओट लेकर सैन्यदल पर गोलीबारी शुरू कर दी। कैप्टन राजीव कुमार जून भयभीत हुए बिना उनके नजदीक पहुंचे और अन्ततः दोनों उग्रवादियों पर गोली चलाकर उन्हें मार गिराया तथा उनसे मैगजीन और गोलाबारूद समेत एक राइफल भी बरामद कर ली ।

कैप्टन राजीव कुमार जून ने इसी सैन्य कार्रवाई के दूसरे चरण में ध्यारिन गांव के आस पास के इलाके की गहन रूप से सात बार तलाशी ली । ये उग्रवादियों, की कुछ संदेहास्पद गतिविधियों को भांपकर उनपर फायर करने के लिए दोबारा ध्यारिन गांव की ओर दौड़े । उग्रवादियों ने दोबारा गोली-बारी कर घने जंगलों की ओर बच निकलने का प्रयास किया । कैप्टन राजीव कुमार जून अपनी जान को भारी खतरा होने के बावजूद तुरन्त उग्रवादियों का पीछा करने लगे । उग्रवादियों द्वारा स्वचालित शस्त्रों से की जा रही गोलियों की बौछार के बावजूद कैप्टन राजीव कुमार जून अपने गिने-चुने सैन्य साथियों को साथ लेकर उग्रवादियों के समीप पहुंचे और अन्ततः उन पर एक बार फिर हमला किया । इस हमले में उनमें से तीन दुर्दान्त उग्रवादी मारे गए और एक घायल हो गया । उनमें से एक खूंखार उग्रवादी हिजबुल मुजाहिदीन का स्वयंभू कंपनी कमांडर निकला ।

इस प्रकार कैप्टन राजीव कुमार जून ने उग्रवादियों का मुकाबला करने में वीरता, साहस और कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया ।

23. 13741695 नायक योगराज सिंह, जम्मू कश्मीर राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 20 अप्रैल, 1994)

जम्मू कश्मीर में बांगुम गांव में छिपे हुए कुछ सशस्त्र राष्ट्र-विरोधी तत्वों के बारे में विशेष गुप्त सूचना प्राप्त होने पर 20 अप्रैल, 1994 को सुबह गांव की घेराबंदी कर तलाशी लेने की कार्रवाई की गई । प्रातः लगभग 6 बजे नायब सूबेदार सतीश कुमार के नेतृत्व में एक गश्ती दल को इस गांव में कर्फ्यू लगाने का काम सौंपा गया । गश्त के दौरान नायब योगराज सिंह ने देखा कि दो सशस्त्र राष्ट्रविरोधी छिपकर घेराबंदी तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना वे उनके पीछे दौड़ पड़े । निरन्तर पीछा किए जाने के बाद राष्ट्रविरोधी तत्वों ने अब्दुल समद बानी के पुत्र गुलाम नबी बानी के मकान में शरण ले ली । यह गश्ती दल उस मकान की घेराबंदी करने के लिए आगे बढ़ा । नायब योगराज सिंह अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न कर दौड़कर उस मकान तक गए, एक खिड़की को धक्का देकर खोला और एक राष्ट्र विरोधी को मार गिराया जिसकी बाद में गुलाम मोहम्मद मीर के नाम से शिनाख्त की गई । इस बीच दूसरे राष्ट्रविरोधी तत्व ने उस वीर सिपाही पर गोलियों की बौछार कर दी जिससे उनका सीना छलनी हो गया । नायब योगराज सिंह ने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान देने से पूर्व अपने गश्ती दल को यह संकेत दिया कि उस मकान में दूसरा राष्ट्रविरोधी तत्व है । तत्पश्चात उसे मार दिया गया जो भाड़े पर लिया गया अफगानी उग्रवादी निकला ।

इस प्रकार, नायक योगराज सिंह ने असाधारण साहस कर्तव्यनिष्ठा तथा आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया ।

24. जे० सी–192485 सूबेदार गंगा राम महार (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 22–8–1994)

22 अगस्त, 1994 को 5 महार रेजिमेंट ने सूबेदार गंगा राम की बालेडोगले से बरलीगो जा रहे उस महत्वपूर्ण कार्मिक दल की मार्ग रक्षा के लिए कमांडर के रूप में तैनात किया गया था जो सोमालिया में युद्ध के कारण तहस-नहस हुए तथा परित्यक्त आधारभूत ढांचों के पुन-निर्माण के लिए जा रहा था जब यह कार्मिक दल बरलीगो के सामान्य क्षेत्र से गुजर रहा था तो यह सड़क की उत्तरी ओर से की गई भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया जिसके प्रत्युत्तर में तुरन्त जवाबी गोलीबारी की गई इस पहली भिड़न्त में ही तीन भारतीय सैनिक मारे गए तथा आठ घायल हो गए । सूबेदार गंगा राम ने तत्काल स्थिति का जायजा लिया और महसूस किया कि वे अत्यधिक तादाद में हैं । उन्होंने ड्राइवर लांस नायक सौदागर सिंह को अत्यधिक सुरक्षित स्थान पर पहुंचने का निर्देश दिया और भारी गोली-बारी के कारण वाहन के शीशे टूट जाने पर भी वे उपयुक्त स्थान पर पहुंचने में सफल रहे । सूबेदार गंगा राम के नेतृत्व में किए गए इस साहसिक हमले में वे सूबेसोम के शिथिल कार्मिकों के वाहनों को बचाने में सफल रहे और तुरन्त ही शत्रु पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े । परन्तु दुश्मनों ने टोयोटा पिक अप वाहन पर मशीन गनों तथा जेड यू–23 दोनाली वायुयानरोधी गन से गोली बारी कर दी । इसी समय ड्राइवर लांस नायक सौदागर सिंह की दांई जांघ में गोली लगी तथा सूबेदार गंगा राम की बाईं बांह में चोट लगने के कारण स्वयं भी घायल हो गए । वे वाहन से बाहर निकले और अपनी कारबाइन से शत्रुओं पर गोलीबारी करने लगे । यह गोलीबारी करते समय इस समय सूबेदार गंगा राम के सीने में गोली लगी और वे जमीन पर गिर पड़े परन्तु इसके बावजूद वे दोबारा खड़े होकर गोलीबारी करने लगे । इस बार उनके सीने में एक और गोली आ लगी जो उनके लिए प्राणघातक सिद्ध हुई । इस कार्रवाई के अंत में तथा पकड़े गए देशद्रोहियों से पूछताछ किए जाने पर इस बात की पुष्टि हुई कि घात लगाने वाला यह अत्यधिक कुशल युद्धनेता वाला दल था जिसे सोमाली जेड यू–23 वायुयानरोधी गन तथा अन्य हथियारों के पकड़े जाने का बड़ा धक्का लगा । शत्रु दल में से दस देशद्रोही मारे गए और ग्यारह घायल हुए जबकि तीन को जिन्दा पकड़ लिया गया ।

इस प्रकार सूबेदार गंगा राम ने सोमालिया के देशद्रो-हियों का मुकाबला करने में साहस एवं दृढ़निश्चय का परिचय देते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया ।

25. 4562409 सिपाही देवेन्द्र चांद, महार (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 22 अगस्त, 1994)

सोमालिया में युद्ध के कारण तहस-नहस हुई इमारतों के ततरूम से किए जा रहे पुनर्निर्माण कार्य के एक हिस्से को

पूरा करने के लिए बेलडवेगले से बर्डिगो जा रहे सिविल कार्मिक दस्ते की मार्ग में रक्षा करने के लिए उसके साथ 22 अगस्त, 1994 को, 5 महार रेजिमेंट का शस्त्रों से लैस एक रक्षक दल भेजा गया था।

जब यह दस्ता सामान्य क्षेत्र को पार कर रहा था तो उस पर घात लगाकर हमला किया गया। इस दस्ते के तीनों मार्गरक्षी वाहन, सड़क के उत्तरी ओर से स्वचालित शस्त्रों से की गई भारी गोलीबारी की चपेट में आ गए। शत्रुओं द्वारा शस्त्रों से सुनियोजित ढंग से की गई गोलीबारी से भारी संख्या में भारतीय सैनिक हताहत हो गए। पहली बार किए गए इस भीषण हमले से तीन भारतीय सैनिक मारे गए और आठ सैनिक घायल हो गए। इसके बावजूद सिपाही देवेन्द्र चांद अपनी राइफल से घात लगाकर हमला करने वाले दल पर गोलीबारी करते रहे। इसके बाद उन्होंने शत्रुओं पर मीडियम मशीन गन से अचूक गोलीबारी की। शत्रुओं द्वारा स्वचालित शस्त्रों से की जा रही भीषण गोलीबारी की तनिक भी परवाह किए बिना वे अंतिम लगातार शत्रुओं से जूझते रहे। इसी बीच सिपाही देवेन्द्र चांद पर शत्रु की एक गोली आ लगी जिससे उनकी बाईं अग्रभुजा छिन्न-भिन्न हो गई, इतने में ही उनके बाएं कंधे पर दूसरी गोली आ लगी जिससे वे अपने वाहन के सामने जा गिरे। इस कार्रवाई के अंत में यह पता चला कि शत्रुओं के दस आदमी मारे गए और ग्यारह घायल हो गए। भारतीय सैनिकों ने शत्रुओं के तीन शस्त्र बरामद किए और तीन को जिन्दा पकड़ लिया।

इस प्रकार सिपाही देवेन्द्र चांद ने सोमालिया के देशद्रोहियों का मुकाबला करने में साहस और दृढ़-संकल्प का परिचय देते हुए अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान कर दिया।

गिरीश प्रधान
निदेशक

---

सं० 93-प्रेज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी परम असाधारण कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए "परम विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

लेफ्टिनेंट जनरल सुरिन्दर सिंह (आई० सी०-10008), अ० वि० से० मे०, कवचित कोर।

लेफ्टिनेंट जनरल रामेश्वर नाथ बत्रा (आई० सी०-10032), वि० से० मे०, आर्टिलरी।

लेफ्टिनेंट जनरल रवीन्दर कुमार गुलाटी (आई० सी०-10447), कवचित कोर।

लेफ्टिनेंट जनरल मोती लाल धर (आई० सी०-10462), अ० वि० से० मे०, कवचित कोर।

लेफ्टिनेंट जनरल ए० के० गौतम (आई० सी०-10489), कवचित कोर।

लेफ्टिनेंट जनरल रमेश [illegible] (आई० सी०-7777), आर्टिलरी।

लेफ्टिनेंट जनरल [illegible] कुमार घोष (आई० सी०-7802), अ० वि० से० मे०, सिग्नल्स।

लेफ्टिनेंट जनरल सुरेन्दर वर्मा (आई० सी०-8572), सेना आयुध कोर।

लेफ्टिनेंट जनरल रंजीत शिवदासानी (आई० सी०-10104), इंजीनियर्स।

लेफ्टिनेंट जनरल सतीश, ललवाह (आई० सी०-10457), वि० से० मे०, सेना आयुध कोर।

लेफ्टिनेंट जनरल मदन मोहन लखेड़ा (आई० सी०-10497), अ० वि० से० मे०, वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री।

लेफ्टिनेंट जनरल जगदीश नरायन (आई० सी०-11728), अ० वि० से० मे०, वि० से० मे०, इंजीनियर्स।

लेफ्टिनेंट जनरल चन्द्र कैलाश कपूर (आई० सी० 12169), अ० वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री।

लेफ्टिनेंट जनरल [illegible] (एम० आर०-0990), वि० से० मे० सेना चिकित्सा कोर (सेवा-निवृत्त)।

लेफ्टिनेंट जनरल राजिन्दर कुमार सूरी (एम० आर०-1420), वि० से० मे० सेना चिकित्सा कोर (सेवा-निवृत्त)।

लेफ्टिनेंट जनरल सुरेश नाथ एंडले (आई० सी०-10107), अ० वि० से० मे०, इंजीनियर्स (सेवानिवृत्त)।

लेफ्टिनेंट जनरल जवाहर लाल मल्होत्रा (आई० सी०-10109), अ० वि० से० मे०, वि० से० मे०, मैकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री (सेवानिवृत्त)।

लेफ्टिनेंट जनरल किशन भाटिया (आई० सी०-10158), सेना सेवा कोर (सेवानिवृत्त)।

ब्रिगेडियर मोहिन्दर प्रताप भगत (आई० सी०-16634), महार रेजिमेंट।

वाइस एडमिरल राज बहादुर सूरी, अ० वि० से० मे०, वि० से० मे० (00375 ए)।

21. वाइस एडमिरल अजन्ता वेंकटा राम सूर्यनारायण, अ० वि० से० मे०, वि० से० मे०, (50077-के)।

एयर मार्शल प्रताप राव, अ० वि० से० मे०, वा० मे० (5188) उड़ान (पायलट)।

एयर मार्शल देवेश्वर पुरी, वा० मे० (5199) उड़ान (पायलट)।

एयर मार्शल सदानन्द कुलकर्णी, वा० मे० (5292) उड़ान (नेवीगेटर)।

एयर मार्शल सतीश कुमार सरीन, अ० वि० से० मे०, वा० मे० (5370) उड़ान (पायलट)।

एयर मार्शल कोवेन्ना करियप्पा, वा० मे० (5376) उड़ान (पायलेट) ।

एयर मार्शल राजामणि रामामूर्ति, वि० से० मे० (5614), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक) (सेवानिवृत्त) ।

गिरीश प्रधान
निदेशक

---

सं० 94-प्रेस/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी अति असाधारण कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए "अति विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

लेफ्टिनेंट जनरल केविन लूईस डी' सोज्जा (आई० सी०-11507), मकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री ।

लेफ्टिनेंट जनरल बलदेव सिंह (आई० सी०-12337), वि० से० मे० ग्रेनेडियर्स ।

लेफ्टिनेंट जनरल राम दास मोहन (आई० सी०-12584), वि० से० मे०, मद्रास ।

लेफ्टिनेंट जनरल गुरप्रीत सिंह बरार (आई० सी०-12642), वि० से० मे०, पंजाब रेजिमेंट ।

मेजर जनरल गुरदेव सिंह (आई० सी०-11043), सिग्नल्स ।

मेजर जनरल देवेन्द्र नाथ वर्मा (आई० सी०-11624), सिग्नल्स ।

मेजर जनरल विनय शंकर (आई० सी०-12090), वि० से० मे०, आर्टिलरी ।

मेजर जनरल बाल गोपाल शिवले (आई० सी०-12200), आर्टिलरी ।

मेजर जनरल शैलेन्द्र कुमार भटनागर (आई० सी०-12405), सेना आयुध कोर ।

मेजर जनरल बलदेव सिंह रत्नावा (आई० सी०-12410), इन्फैन्ट्री ।

मेजर जनरल बोयापटी सुब्बया नायडू सरस्वती एम० आर०-12657), वि० से० मे०, सैन्य परिचर्या सेवा ।

मेजर जनरल हिन्द रवि सिंह मान (आई० सी०-12813), गार्डस ।

मेजर जनरल सुरिन्दर वीर सिंह कोचर (आई० सी०-13247), गोरखा राइफल्स ।

मेजर जनरल सर्बजीत सिंह ग्रेवाल (आई० सी०-13264), से० मे० वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री ।

मेजर जनरल अल्ला रामा कृष्णा रेड्डी (आई० सी०-13379), बिहार ।

मेजर जनरल देवेन्द्र कपिल (आई० सी०-13858), वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियरी ।

मेजर जनरल दासरथी रघुनाथ (एम० आर०-01435), सेना चिकित्सा कोर ।

मेजर जनरल विजय प्रसाद दास (टी० सी०-31231), सेना डाक सेवा ।

मेजर जनरल बलदेव राज बरमा (आई० सी०-11890), जाट ।

मेजर जनरल नारंग मन मोहन राय (आई० सी०-12655), इंजीनियर्स ।

मेजर जनरल समे राम (आई० सी०-12840), उ० यु० से० मे०, वि० से० मे०, ग्रेनेडियर्स ।

मेजर जनरल लीलू तहिलियानी (आई० सी०-12555), वि० से० मे०, सिगनल्स ।

मेजर जनरल प्रांण नाथ लेदर (आई० सी०-13456), वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियरी ।

मेजर जनरल रविन्द्र नाथ कक्कड़ (बी०-112), रिमाउंट पशुचिकित्सा कोर (सेवानिवृत्त) ।

मेजर जनरल जसजित सिंह तलवार (आई० सी०-11061), आर्टिलरी (सेवानिवृत्त) ।

मेजर जनरल ललित कुमार गुप्ता (आई० सी०-11547), इंजीनियर्स (सेवानिवृत्त) ।

मेजर जनरल महेन्द्र कुमार सक्सेना (आई० सी०-10449), सिख लाइट इन्फैन्ट्री (सेवानिवृत्त) ।

मेजर जनरल कुरुविल्ला जैकब कोशी (आई० सी०-12256), वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियरी (सेवानिवृत्त) ।

ब्रिगेडियर मनुर सिंह खन्ना (आई० सी०-15511), वीर चक्र आर्टिलरी ।

ब्रिगेडियर गम्भीर सिंह नेगी (आई० सी०-16545), वि० से० मे० गोरखा राइफल्स ।

कर्नल मर्चेन्ट विनेश पुरुषोतम (आई० सी०-26360), मद्रास ।

कर्नल अवध किशोर सिंह (आई० सी०-28192) वि० से० मे०, इंजीनियर्स ।

लेफ्टिनेंट कर्नल कामाख्या प्रसाद सिंह देव (टी० ए०-41387), प्रादेशिक सेना ।

कार्यवाहक वाइस एडमिरल विनोद पसरीचा, नौ० मे०, (00522 के) ।

रियर एडमिरल सिमंत केशरी दास, (00447-आर) ।

रियर एडमिरल अनन्तनारायणन गणेश, वि० से० मे०, (50122 एन) ।

रियर एडमिरल रमन पुरी, वि०से०मे० (00604—वाई०)

रियर एडमिरल नारायण कृष्णन, वि० से० मे०, (60097—एच) (सेवानिवृत)

कमोडोर हरजीत सिंह कंग, वि० से० मे० (40190—आर)

कमोडोर प्रमोद कुमार गोयल, वि०से० मे० (60089—आर) (सेवानिवृत)

एयर मार्शल रमेश चन्द्र बाजपेयी (5967) वैमानिक इंजीनियरी (इलेक्ट्रानिकी)

एयर वाइस मार्शल तुषार से०वा०मे० (6006) उड़ान (पायलट)

एयर वाइस मार्शल कृष्णन नारायणन नायर (6346) उड़ान (पायलट)

एयर वाइस मार्शल जयाराज हेनरी मैन्डोडी, वि० से० मे० (6446) परिभारिकी

एयर वाइस मार्शल सुभाष चन्द्र मुखर्जी (6977) लेखा

एयर कमोडोर थिरूनिल्लायी रामास्वामी जानकीरमन (7058), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)

एयर कमोडोर कुक्केहल्लीप्रभाकर हेगड़े वि० से० मे० (7253) चिकित्सा

एयर कमोडोर तेजा मोहन अस्थाना, वा० मे० (7672 उड़ान (पायलट)

एयर कमोडोर हरबिन्दर सिंह सिंह सिद्धु, वा० मे० (7682) उड़ान (पायलट)

एयर कमोडोर कुरूमथोड़ाथिल चेरियन फिलिपोस (7702) उड़ान (पायलट)

एयर कमोडोर अनिलकुमार त्रिखा, वि० से० मे० (8436) उड़ान (पायलट)

ग्रुप कैप्टन वासारी जयपाल, वि० से० मे० (8361), दंत चिकित्सा (सेवानिवृत)

जी० ओ०—309 डब्ल्यु० मुख्य अभियंता नवल किशोर प्रसाद, सीमा सड़क विकास बोर्ड

जी० ओ० — 697 —वाई० अधीक्षण अभियंता (सि०) रामेश्वर दत्त (सेवानिवृत), सीमा सड़क विकास बोर्ड

गिरीश प्रधान
निदेशक

---

सं० 95—प्रेज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी उच्चकोटि की विशिष्ट सेवा के लिए "विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

मेजर जनरल गुरमुख हरचन्दराय इसरानी, (आई० सी०—14154), इन्फैन्ट्री ।

ब्रिगेडियर शशीभूषण कंवल (आई० सी०—12551), कुमाऊं ।

ब्रिगेडियर रवि मलहोत्रा (आई० सी०—13881), आर्मड कोर ।

ब्रिगेडियर भूप सिंह राठी (आई० सी०—13900), वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियर्स ।

ब्रिगेडियर सतिन्द्र मूलराज चांद (आई० सी०—13908), आर्टिलरी ।

ब्रिगेडियर अविनाश कपिला (आई० सी०—14383) राजपूत ।

ब्रिगेडियर यदविन्दर सिंह तेजा (आई० सी०—15178), सेना आयुध कोर ।

ब्रिगेडियर श्रीनीवास गोपालन गोविन्द कुमार (आई० सी०—15402), सिग्नल्स ।

ब्रिगेडियर निरंजन किशोर हेगडे (आई० सी०—15465), आर्टिलरी ।

ब्रिगेडियर पार्थो सेन (आई० सी०—15477), आर्टिलरी ।

ब्रिगेडियर भरत नाथ कौल (आई० सी०-15847), —इन्फैंट्री ।

ब्रिगेडियर अमरजीत सिंह पूनिया (आई० सी०—15856), जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स ।

ब्रिगेडियर हरभजन सिंह (आई० सी०—16188), आर्टिलरी ।

ब्रिगेडियर दिलीप राजगोपाल नाइडू (आई० सी०—16457), इंजीनियर्स ।

ब्रिगेडियर केवल कृष्ण गुप्ता (आई० सी०—16509), इंजीनियर्स ।

ब्रिगेडियर गोविंद जी० मिश्रा (आई० सी०—20007), राजपूत ।

ब्रिगेडियर चन्द्र भूषण शुक्ला (आई० सी०—20992), सिग्नल्स ।

ब्रिगेडियर रमेश नागपाल (आई० सी०—22127), राजपूताना राइफल्स ।

ब्रिगेडियर अजीत सिंह बी० आर० (आई० सी०—22365), मद्रास ।

ब्रिगेडियर सुरेन्द्र कुमार सानन (आई० सी०—22880), जज एडवोकेट जनरल विभाग ।

ब्रिगेडियर मास्तराव गणपतराव कदम (आई० सी०—26187), जज एडवोकेट, जनरल विभाग ।

ब्रिगेडियर गजवीर सिंह चौहान (एम० आर०—02180), सेना चिकित्सा कोर ।

ब्रिगेडियर सुकुमार सेन गुप्ता (एम० आर०–02855), सेना चिकित्सा कोर।

ब्रिगेडियर आशीष दूबे (आई० सी०–16079), आर्टीलरी।

ब्रिगेडियर सतीश कपूर (आई० सी०–16086), इंजीनियर्स।

ब्रिगेडियर इन्दर पाल सिंह (एम० आर०–16670) गढ़वाल राइफल्स।

ब्रिगेडियर पाल सिंह (आई० सी०–01654), चिकित्सा कोर।

ब्रिगेडियर कुलदीप सिंह जम्वाल (आई० सी०–19001), आर्टिलरी।

ब्रिगेडियर मनजीत सिंह चौधरी (आई० सी०–12600), आर्टिलरी (सेवानिवृत्त)

ब्रिगेडियर पूरन चन्द उप्पल (आई० सी०–13177), कुमाऊं (सेवानिवृत्त)।

ब्रिगेडियर सिरपूरकर अनिल नरायन (आई० सी०–13261), बिहार (सेवानिवृत्त)।

कर्नल सुखइन्दर सिंह (आई० सी०–12024), सिक्ख रेजिमेंट।

कर्नल सदानन्द महादेव जोशी (आई० सी०–16873), वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियरी।

कर्नल रिचर्ड खरे (आई० सी०–17240), गोरखा राइफल्स।

कर्नल वीर चन्द जैन (आई० सी०–17280), वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियरी।

कर्नल अशोक कुमार सामन्तराय (आई० सी०–19286), आर्टिलरी।

कर्नल दलीप कुमार (आई० सी०–23447), आयुधना कोर।

कर्नल गुरदर्शन सिंह ग्रेवाल (आई० सी०–25060), पैराशूट रेजिमेंट।

कर्नल गोविन्द गोपाल द्विवेदी (आई० सी०–25466), 16 जाट।

कर्नल सुरेश कुमार सिंह राणा (आई० सी०–25563), राजपूत रेजिमेंट।

कर्नल सुखबीर सिंह (आई० सी०–26136), जाट रेजिमेंट।

कर्नल हेमन्त कुमार दधीच (आई० सी०–27181) इंजीनियर्स।

कर्नल अनिल कुमार मलिक (आई० सी०–27708) जम्मू एवं कश्मीर लाइट इन्फेन्ट्री।

कर्नल नरिन्द्रजीत सिंह सिधु (आई० सी०–28327), से० मे० सेना विमानन।

कर्नल सुरेन्द्र सिंह (आई० सी०–29734), से० मे० महार।

कर्नल ज्योत्सना दासगुप्ता (आई० सी०–29791), मकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री।

कर्नल जगदीश प्रसाद पांडेय (एस० एल०–1312), सामान्य सेवा।

कर्नल भास्करन रमेश (एम० आर०–02419), सेना चिकित्सा कोर।

कर्नल राजिन्दर सिंह वर्मा (आई० सी०–24274), राजपूताना राइफल्स।

कर्नल मनमोहन सिंह कोछड़ (आई० सी०–24660), असम रेजिमेंट।

कर्नल कुंवर दौलत सिंह शेखावत (आई० सी०–19393), कैवलरी।

कर्नल अरविन्द महाजन (आई० सी०–19853), वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियरी।

कर्नल मोहिन्दर बीर आनंद (आई० सी०–29691), 18 कैवेलरी।

कर्नल सुरेश दिगम्बर कुलकर्णी (एम० आर०–02495), सेना चिकित्सा कोर।

कर्नल समरेश कुमार सिन्हा (आई० सी०–18917), इन्फैन्ट्री (सेवानिवृत्त)।

लैफ्टिनेंट कर्नल धर्म बीर सिंह राठी (आई० सी०–25129), वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियरी।

लैफ्टिनेंट कर्नल अजय कुमार सिंह (आई० सी०–27606), कवचित कोर।

लैफ्टिनेंट कर्नल पी० डी० कुलकर्णी (आई० सी०–27869), सेना सेवा कोर।

लैफ्टिनेंट कर्नल राजीव कुमार (आई० सी०–36501), कवचित कोर।

लैफ्टिनेंट कर्नल चितरंजन पाण्डा (एम० आर०–04358), सेना चिकित्सा कोर (मरणोपरांत)।

लेफ्टिनेंट कर्नल रविन्द्र नाथ गौतम (एम० आर०–3471), सेना चिकित्सा कोर।

लैफ्टिनेंट कर्नल अनिल भट (आई० सी०–27129), कवचित कोर।

लैफ्टिनेंट कर्नल युधवीर सूरी (एम० आर०–02686), सेना चिकित्सा कोर।

लैफ्टिनेंट कर्नल वल्लीकाटे मंगलायू वलाप्पील वेणुगोपालन (एम० आर०–03212), सेना चिकित्सा कोर।

लैफ्टिनेंट कर्नल रणवीर इन्दर सिंह (एम० आर०–4699), सेना चिकित्सा कोर।

मेजर जी० डी० ई० विल्लीग्राहम (आई० सी०–37228), वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियरी।

मेजर संजय कपूर (एम० आर०–04725), सेना चिकित्सा कोर।

मेजर अनुराग अशोक गर्ग (एम० आर०–04736), सेना चिकित्सा कोर।

मेजर कुनाल कुमार मुखोपाध्याय (आई० सी०–30777), सिग्नल्स।

मेजर विजेन्द्र सिंह यादव (आई० सी०–38151), सेना पुलिस।

मेजर किशन लाल (एन० टी० आर०–16419), सेना चिकित्सा कोर (मरणोपरांत)।

कैप्टन कुमारी संध्या (एन० आर०–18071), सैन्य परिचर्या सेवा।

कैप्टन चन्द्र शेखरन पिल्लै (एस० एल०–3798), वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियरी।

जे० सी०–136970, सूबेदार ओम प्रकाश, जाट।

जे० सी०–196204, नायब सूबेदार दीना राम, राजपूताना राइफल्स।

कार्यवाहक रियर एडमिरल प्रवेश जेटली, (50166-एन)।

कमोडोर पापनी वीटिल गोपालन कुट्टी, (00587-एच)।

कमोडोर बिभु कल्याण मोहंती, (00545–एन)।

कमोडोर राजीव परलीकर, (40210–के)।

कमोडोर प्रेमजीत रविन्द्र फ्रेंकलिन, (00635–टी)।

कमोडोर वेनकटेश्वर विश्वनाथ, (00721–एन)।

कमोडोर जगदीश चन्द्र भाटिया, (50260–बी)।

कमोडोर राजिन्दर भंडारी, यु० से० मे० (00816-बी)।

कमोडोर राकेश चोपड़ा, (00824-वाई)।

कमांडर रवि इन्द्र सिंह, (50239-बी)।

सर्जन कमांडर दिनेश चन्द्र भोसल, (79013-जेड)।

कमांडर रणदीप सिंह, (40561-एच)।

कमांडर अनिल कुमार वर्मा, (40704-एच)।

कमांडर मान्जूरान इटियेरा जोस, (00936-ए) (सेवानिवृत्ति)।

गुलजार सिंह, एम० सी० पी० ओ०–1, (क्यू० ए०–1), (084638-के)।

पृथ्वी सिंह, एम० सी० पी० ओ०–1, (एम० पी० टी०–1), (089727-ए)।

एयर वाइस मार्शल श्री पेरुम्बुदुर राघवन (6710), परिभारिकी।

एयर कमोडोर प्रोतीप कुमार घोष (7106) वैमानिक इंजीनियरी (इलैक्ट्रानिकी)।

एयर कमोडोर श्रीनिवासन वेंकटाचारी (6976), लेखा।

एयर कमोडोर गुलशन कुमार क्वात्रा (8001), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)।

ग्रुप कैप्टन अशोक कुमार (9371), परिभारिकी।

ग्रुप कैप्टन विनोद खन्ना (9577), वैमानिक इंजीनियरी (इलैक्ट्रानिकी)।

ग्रुप कैप्टन शक्ति नाथ कार (10083), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)।

ग्रुप कैप्टन हरिहरपुर वेंकटसुबाइया हरिहरण (11244 प्रशासन)।

ग्रुप कैप्टन अरविन्द अग्रवाल (11502), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)।

ग्रुप कैप्टन दयानन्द कुन्थआन्ना हेगडे (11743), वैमानिक इंजीनियरी (इलैक्ट्रानिकी)।

ग्रुप कैप्टन प्रदीप कुमार (12029), उड़ान (पायलट)।

ग्रुप कैप्टन कुलदीप सिंह राना (12534), उड़ान (पायलट)।

ग्रुप कैप्टन विवेक कुमार चोपड़ा (12752), उड़ान (पायलट)।

ग्रुप कैप्टन श्याम लाल शर्मा (12804), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)।

विंग कमांडर विनोद कुमार शर्मा (10670), वैमानिक इंजीनियरी (इलैक्ट्रानिकी)।

विंग कमांडर रघुबीर सिंह बरागटा (11837), उड़ान (नेवीगेटर)।

विंग कमांडर दीपक साहनी (12943), उड़ान (पायलट)।

विंग कमांडर धर्मवीर अरोड़ा (13119), लेखा।

विंग कमांडर विनोद अग्निहोत्री (13360), चिकित्सा ।

विंग कमांडर गरिमेल्ला कुंडलि गुरू प्रसाद (13961), चिकित्सा ।

विंग कमांडर नरेन्द्र कुमार (14312), वैमानिक इंजीनियरी (इलैक्ट्रानिकी)

स्क्वाड्रन लीडर प्राण किशोर कौल (14983), लेखा ।

स्क्वाड्रन लीडर मैथ्यू जार्ज (14987), लेखा वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)

स्क्वाड्रन लीडर मुजीब उल्ला खान (15479); वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)

स्क्वाड्रन लीडर सुनील कुमार शर्मा (16106); प्रशासन/फाइटर नियंत्रक ।

स्क्वाड्रन लीडर विनोद कुमार गोयल (16540); वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक) ।

स्क्वाड्रन लीडर तुषार गुणवन्तराय देसाई (17665), वैमानिक इंजीनियरी (इलैक्ट्रानिकी)

264724 जूनियर वारंट अफसर उदय वीर सिंह, वर्कशाप फिटर ।

जी० ओ०-211, एच मुख्य इंजीनियर, जगदीश विश्वनाथन ।

जी० ओ०-720-एफ० एस० ई० (मैक०) एस० जी० अमरजीत सिंह खालसा ।

जी० ओ०-1278, एन० सी० ओ० 1 (एस० जी०) दुर्गा सिंह रावत ।

गिरीश प्रधान
निदेशक

---

सं० 96-प्रेज 95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसर को उनके असाधारण साहसिक कार्यों के लिए "सेना मेडल/आर्मी मेडल का बार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेंट कर्नल जंग बहादुर सिंह (आई० सी०-30030), से० मे०, आर्टिलरी ।

गिरीश प्रधान
निदेशक

---

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1995

सं० 97/प्रेज/95—राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी असाधारण कर्तव्यपरायणता अथवा साहसिक कार्यों के लिए सेना मेडल/आर्मी मेडल प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

कर्नल राज कुमार कारवाल (आई० सी०-24652), वि० मे० मे०, 24 राजपूत ।

कर्नल दीपक कुमार मोहन (आई० सी०-25490), बिहार ।

कर्नल ध्रुव चन्द कटोच (आई० सी०-25824), डोगरा ।

कर्नल सालिग राम सिंह पठानिया (आई० सी०-25914), सिख ।

कर्नल नीलाधरी शंकर मुखर्जी (आई० सी०-29165), बिहार ।

कर्नल रणधीर सिंह (आई०सी०-32914), ग्रेनडियर्स ।

कर्नल प्रेम वीर सिंह (आई० सी०-23666), कुमाऊं ।

कर्नल करमवीर शांडिल (आई० सी०-24200), आर्टिलरी ।

कर्नल बलराज सिंह नागल (आई० सी०-24260), जाट ।

कर्नल जयपाल सिंह शेखावत (आई० सी०-25216), राजपूताना राइफल्स ।

कर्नल सत्येन्द्र कुमार (आई० सी०-25853), गोरखा राइफल्स ।

कर्नल प्रमित राय (आई० सी०-25882 ), असम ।

कर्नल कोपराय सुरिन्दर पाल सिंह (आई० सी०-25925), राजपूताना राइफल्स ।

कर्नल आनन्द मोहन वर्मा (आई० सी०-27038), राजपूत ।

कर्नल मुक्काटिरा करियप्पा मन्दाणा (आई० सी०-27384), राजपूताना राइफल्स ।

कर्नल कुलदीप सिंह ऐथमियां (आई० सी०-27425), पंजाब ।

कर्नल कामत पी० गोपाल कृष्णा (आई० सी०-27782), मद्रास ।

कर्नल विनोद कुमार कोसर (आई० सी०-29060), जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स ।

कर्नल दलबीर सिंह सन्धू (आई० सी०-29331), जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स ।

कर्नल चन्द्र सेन मुकुन्दराव निम्बालकर (आई० सी०-19059), गढ़वाल राइफल्स ।

कर्नल कृष्ण कुमार खुराना (आई० सी०-28914), डोगरा ।

कर्नल गुरदीप सिंह घुमन (आई० सी०–27006), इन्फैन्ट्री ।

लेफ्टिनेंट कर्नल रमेश सिंह चौहान (आई० सी०–33483), आर्टिलरी ।

लेफ्टिनेंट कर्नल सरदूल सिंह (आई० सी०–36274), आर्टिलरी ।

मेजर सत्यवीर सिंह यादव (आई० सी०–39485), राजपूताना राइफल्स ।

मेजर सुधीर हंस (48214), इन्फैन्ट्री ।

मेजर विनोद कुमार चन्द (आई० सी०–34391), राजपूताना राइफल्स ।

मेजर रणधीर कुमार सेठी (आई० सी०–36648), इंजीनियर्स ।

मेजर प्रभू नन्द यदोराव जीपरबते (आई० सी०–40912), मद्रास ।

30. मेजर संजीव वशिष्ट (आई० सी०–37305), इंजीनियर्स ।

मेजर नीरज शर्मा (आई० सी०–41000), सेना विमानन ।

मेजर अशोक चन्देल (आई० सी०–45923), जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स ।

मेजर सुभाष शंकरराव पाटील (आई० सी०–35231), 15 पंजाब ।

मेजर राकेश कुमार पटयाल (आई० सी०–39803), इंजीनियर्स ।

कैप्टन राजीव (आई० सी०–41550), कुमाऊं ।

कैप्टन धनंजय पलसोकर (आई० सी०–50452) गार्ड्स ।

कैप्टन हरिन्दर सिंह सिद्धू (आई० सी०–50350), मद्रास ।

कैप्टन अरूण सिंह जसरोटिया (आई० सी०–48171) 9 पैरा कमांडो ।

कैप्टन विश्वेश्वर प्रसाद शर्मा (एम० एस०–34935), ग्रिनडियर्स ।

कैप्टन जगदीश लाल (आई० सी०–44630), सेना सप्लाई कोर ।

कैप्टन लैसली ओजित मिसाल (आई० सी०–50549), मराठा लाइट इन्फैन्ट्री ।

कैप्टन सुनील कुमार सौन (आई० सी०– 51036), राजपूत ।

लैफ्टिनट हेमन्ता पांगिग (आई० सी०–50440), जम्मू एवं कश्मीर राईफल्स ।

सैकेन्ड लेफ्टिनेंट संदीप शर्मा (आई० सी०–51021), इंजीनियर्स ।

सैकेण्ड लेफ्टिनेंट अशीष कुमार मोहन्ती (आई० सी०–52047), जाट ।

जे० सी०–169160 सूबेदार मनोहर लाल, राजपूत (मरणोपरांत) ।

जे० सी०–185187, सूबेदार रतन सिंह, सिख ।

जे० सी०–177116, सूबेदार सुरेन्द्र पाल सिंह, इंजीनियर्स (मरणोपरांत) ।

जे० सी०–198775, सूबेदार अशोक बलीराम राणे, आर्टिलरी ।

जे० सी०–148346, सूबेदार तेलू राम मान, इन्फैन्ट्री ।

4055370 हवलदार राजेन्द्र सिंह, गढ़वाल राइफल्स ।

4546835 हवलदार जय प्रसाद राय, महार ।

2466545 हवलदार केवल दत्त, पंजाब ।

2469121 हवलदार रूप सिंह, पंजाब ।

2778934 हवलदार महबूब, मराठा लाइट इन्फैन्ट्री (मरणोपरांत) ।

56 14299338 लांस हवलदार कर्ण सिंह राणा, सिग्नल्स ।

2879468 नायक विजय सिंह, राजपूताना राइफल्स ।

5040680 नायक पूर्णा बहादुर थापा, गोरखा राइफल्स ।

13676083 नायक रमेश कुमार गार्ड्स ।

13742393 नायक पवन कुमार. जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स ।

4065158, लांस नायक देवा नन्द, इन्फैन्ट्री ।

4065499, लांस नायक गुमन सिंह, इन्फैन्ट्री ।

4178338, लांस नायक प्रहलाद सिंह, कुमाऊं, (मरणोपरांत) ।

5042442, लांस नायक राम प्रसाद थापा, गोरखा राइफल्स ।

3386998, लांस नायक जोगिन्दर सिंह, इन्फैन्ट्री ।

8026737 लांस नायक (जी० डी०) शश पाल पायनियर कोर ।

2880365 लांस नायक बिरक भान, राजपूताना राइफल्स ।

14375294 लांस नायक दिलीप राजारामजी ठाकरे, आर्टिलरी (मरणोपरांत) ।

4257432 लांस नायक विक्रम टुडू, बिहार (मरणोपरांत) ।

5448782 लांस नायक राम बहादुर गुरुंग, गोरखा राइफल्स (एफ० एफ०) (मरणोपरांत) ।

4552722, लांस नायक सदागर सिंह, महार (मरणोपरांत)।

4553862, लांस नायक मनवर सिंह, महार।

7240564 सवार (ए० डी० टी०) सेन्थील कुमार मुथुस्वामी रिमाउंट एवं पशु चिकित्सा कोर (मरणोपरांत)।

2681873 ग्रेनेडियर अजीत कुमार, ग्रेनेडियर्स।

5044736 राइफलमैन टीका राम थापा, गोरखा राइफल्स (मरणोपरांत)।

2885124 राइफलमैन विवान सिंह, राजपूताना राइफल्स (मरणोपरांत)।

14494091 गनर राज नारायण सिंह चौहान, आर्टिलरी (मरणोपरांत)।

14393428 गनर ओम निवास, आर्टिलरी (मरणोपरांत)।

7430798 सिपाही राम लाल पटेल, महार (मरणोपरांत)।

1074926 ए० एल० डी० रणबीर सिंह, आर्मर्ड।

गिरीश प्रधान
निदेशक

---

सं० 98-प्रेज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी असाधारण कर्तव्यनिष्ठा अथवा साहसिक कार्यों के लिए "नौसेना मेडल/नेवी मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

कैप्टन राकेश कालरा (01257-एफ)।

सर्जन कमांडर प्रकाश सिंह (75139-डब्ल्यू)।

कमांडर गोविन्दन नायर राजीव (01537 टी)।

कमांडर कोराडा नीलकंठा राव (01555-एच)।

कमांडर राकेश कुमार बत्रा (02104-एफ)।

कमांडर उदय वैद्य (02362-टी) (सेवानिवृत्त)।

लेफ्टिनेंट कमांडर अरविन्द कुमार राय शर्मा, (02281-एच)।

लेफ्टिनेंट थंकप्पन पेरूम्पालिल अशोक, (03252-आर)।

लेफ्टिनेंट राजीव कपूर (03365-वाई)।

राजीवन गोपीनाथन, ई० आर० ए०-2 (187509-एच)।

कृपाल सिंह, एल० एस० सी० डी०-11 (113939-वी)।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 99-प्रेज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी असाधारण कर्तव्यनिष्ठा अथवा साहसिक कार्यों के लिए "वायुसेना मेडल/एयर फोर्स मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

ग्रुप कैप्टन श्यामल कुमार बैनर्जी (10941), उड़ान (पायलट)।

ग्रुप कैप्टन सुधीर अस्थाना (12202), उड़ान (पायलट)।

ग्रुप कैप्टन वृत्तमणि श्रीनिवास अय्यंगार गोविंदराजन (12232), उड़ान (पायलट)।

ग्रुप कैप्टन गुरचरन सिंह भोगल (12504), उड़ान (पायलट)।

ग्रुप कैप्टन शिव कुमार भान (12510), उड़ान (पायलट)।

ग्रुप कैप्टन प्रदीप कुमार मुले (12935), उड़ान (पायलट)।

विंग कमांडर जसबीर सिंह पानसर (13370), उड़ान (पायलट)।

विंग कमांडर सेल्वराज राज (13575), उड़ान (पायलट)।

विंग कमांडर मोहिन्दर पाल सिंह गिल (13604), उड़ान (पायलट)।

विंग कमांडर अरूप राहा (13910), उड़ान (पायलट)।

विंग कमांडर प्रमोद कुमार राय (14100), उड़ान (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर संजय दत्तात्रय पतकी (16429), प्रशासन/पैरा जम्पिंग इन्स्ट्रक्टर।

249290 मास्टर वारंट अफसर पन्मुगम अय्यनार उड़ान इंजीनियर।

गिरीश प्रधान
निदेशक

---

सं० 100-प्रेज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी उच्चकोटि की विशिष्ट सेवा के लिए "युद्ध सेवा मेडल प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

मेजर नीलरतन मित्रा (आई० सी०-35971), सें० मे०, आर्टिलरी।

विंग कमांडर नरेन्द्र कुमार उपाध्या (12779), उड़ान (पायलट)।

विंग कमांडर दिलीप दिनकर मंडपे (13937, उड़ान (पायलट)।

स्क्वाड्रन लीडर प्रशांत एकनाथ पतंगे (17706), उड़ान (पायलट)।

गिरीश प्रधान
निदेशक

संसदीय कार्य मंत्रालय

नई दिल्ली-1, दिनांक 8 फरवरी 1995

संकल्प

सं० फा० 8(4)/94-हिन्दी—संसदीय कार्य मंत्रालय ने "संसदीय लोकतन्त्र" से संबंधित विषयों पर एक अखिल भारतीय हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित करने का निश्चय किया । इस योजना का विवरण नीचे दिया गया है :—

1. योजना का नाम :

इस योजना का नाम "संसदीय लोकतन्त्र" पर अखिल भारतीय हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता होगा ।

2. योजना का उद्देश्य :

संसदीय लोकतन्त्र में जनता की अभिरुचि को जागृत करना तथा हिन्दी लेखन को प्रोत्साहन देना है ।

3. प्रतियोगिता का क्षेत्र :

(क) प्रतियोगिता अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित की जाएगी परन्तु इसे दो क्षेत्रों में विभक्त कर दिया गया है :—

क्षेत्र—1 उत्तर प्रदेश, गुजरात, पंजाब, बिहार, मध्य प्रदेश महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली राज्य और चंडीगढ़ तथा अंडमान निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र ।

क्षेत्र—2 अरूणाचल प्रदेश, असम, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, कर्नाटक, केरल, गोआ, जम्मू और कश्मीर, तमिलनाडु, त्रिपुरा, नागालैंड, पश्चिम बंगाल, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम राज्य और दमन दीव, दादरा नागर हवेली, पांडिचेरी, लक्षद्वीप संघ राज्य क्षेत्र ।

(ख) दोनों क्षेत्रों के लिए प्रतियोगिताएं अलग-अलग आयोजित की जाएंगी तथा उनके पुरस्कार भी अलग-अलग ही होंगे ।

4. पुरस्कार की राशि :

(क) योजना के दोनों क्षेत्रों के लिए निम्नलिखित पुरस्कार पृथक-पृथक दिए जाएंगे :—

(क) प्रथम पुरस्कार (दो) रु० 2100/-(इक्कीस सौ रुपये प्रत्येक) ।

(ख) द्वितीय पुरस्कार (तीन) रु० 1500/- (पन्द्रह सौ रुपये प्रत्येक) ।

(ग) तृतीय पुरस्कार (पांच) रु० 1100/- (ग्यारह सौ रुपये प्रत्येक) ।

5. पात्रता

(क) सभी भारतीय नागरिक इसमें भाग ले सकेंगे ।

(ख) प्रतियोगी साक्षर या उसके समकक्ष या उससे अधिक उपाधि प्राप्त होना चाहिए ।

(ग) प्रतियोगी की मातृभाषा उसी क्षेत्र की होनी चाहिए जिस क्षेत्र से वह प्रतियोगिता में भाग ले रहा है ।

6. विषय

प्रतियोगिता का विषय "लोकतंत्र के उन्नयन में पंचायती राज की भूमिका" होगा ।

7 भाषा

निबन्ध की भाषा हिन्दी होगी ।

8. सामान्य शर्तें :

(क) लेखकों से यह अपेक्षित होगा कि वह निबन्ध की टाईप की गई 3 प्रतियां भेजें ।

(ख) प्रतियोगिता के लिए निबन्ध को, प्रतियोगी द्वारा स्वयं लिखा जाना चाहिए । इस आशय की घोषणा निबन्ध के साथ संलग्न होनी चाहिए ।

(ग) निबन्ध किसी पुस्तक से उद्धृत अथवा लघुकृत नहीं होना चाहिए ।

(घ) निबन्ध किसी अन्य भाषा में पूर्व प्रकाशित लेख का हिन्दी अनुवाद नहीं होना चाहिए ।

(ङ) पुरस्कृत निबन्ध पर मंत्रालय का यह अधिकार होगा कि वह उसे किसी रूप में प्रकाशित अथवा उद्धृत कर सकेगा ।

(च) प्रस्तुत निबन्ध को किसी अन्य योजना के अधीन पुरस्कार प्राप्त नहीं होना चाहिए ।

(छ) संसदीय कार्य मंत्रालय को पुरस्कार प्राप्त कर्त्ताओं का चयन और इस प्रकार के चयन को विनियमित करने का अनन्य अधिकार होगा ।

(ज) संसदीय कार्य मंत्रालय को इस योजना में संशोधन करने का अनन्य अधिकार होगा ।

(झ) निबन्ध एक निर्धारित तारीख तक ही स्वीकार किए जाएंगे ।

(ट) निबन्ध के साथ योग्यता-प्रमाण पत्र की सत्यापित प्रतियां संलग्न होनी चाहिए ।

(ठ) निर्धारित शैक्षिक योग्यता में कोई शिथिलता नहीं दी जाएगी ।

9. निबन्ध की शब्द सीमा :

निबन्ध कम से कम 3000 शब्दों का और अधिकतम 5000 शब्दों का होना चाहिए ।

10. मूल्यांकन समिति

(क) पुरस्कार प्रदान किए जाने के बारे में निर्णय एक मूल्यांकन समिति द्वारा लिया जाएगा। इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जाएगा।

(ख) मूल्यांकन के लिए 5 सदस्यों की एक मूल्यांकन समिति गठित की जाएगी जिसके पदेन अध्यक्ष, सचिव, संसदीय कार्य मंत्रालय होंगे। समिति के तीन सदस्य बाहर के व्यक्ति होंगे।

(ग) मूल्यांकन की पूर्ण-प्रक्रिया का निर्धारण संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा किया जाएगा। मूल्यांकन समिति के अध्यक्ष सहित सभी सदस्यों/विशेषज्ञों को उनके द्वारा किए गए मूल्यांकन कार्य के लिए यथानिर्धारित मानदेय और इस संबंध में कि गई यात्राओं के लिए नियमानुसार अनुज्ञेय यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता दिया जाएगा।

(घ) यदि उपयुक्त स्तर के निबन्ध प्राप्त नहीं होते हैं अथवा/और निबन्ध औचित्यपूर्ण संख्या में प्राप्त नहीं होते हैं, उस अवस्था में मंत्रालय को यह अधिकार होगा कि प्रतियोगिता को उसी चरण पर समाप्त कर दें।

11. विविध :

(क) संसदीय कार्य मंत्रालय, प्रमुख हिन्दी और अंग्रेजी समाचार पत्रों के साथ-साथ प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं के समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर प्रतियोगियों से निबन्ध आमंत्रित करेगा।

(ख) केवल पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को ही मूल्यांकन समिति के निर्णय की सूचना मंत्रालय द्वारा दी जाएगी।

(ग) पुरस्कारों का वितरण संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा आयोजित एक समारोह में किया जाएगा। पुरस्कार प्राप्त कर्ताओं को आने-जाने का दूसरे दर्जे का रेल का किराया दिया जाएगा।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति सभी राज्य सरकारों भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को आम सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

देवराज तिवारी
संयुक्त सचिव

---

दिनांक 9 फरवरी 1995

संकल्प

सं० फा० 4(3)/93—हिन्दी, संसदीय कार्य मंत्रालय के समसंख्यक संकल्प दिनांक 25 अगस्त, 1994 के आंशिक आशोधन में, ग्रामीण विकास मंत्रालय (ग्रामीण विकास विभाग) तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री के मंत्रिमंडल से त्याग पत्र दे देने के फलस्वरूप वे अब इस मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य नहीं रहे।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति सभी राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों, भारत के सभी मंत्रालयों तथा विभागों, राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, लोक/राज्य सभा सचिवालय, योजना आयोग, संसदीय राजभाषा समिति, भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक और मंत्रिमण्डल कार्य विभाग का वेतन तथा लेखा कार्यालय, नई दिल्ली को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को जन साधारण की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित कराया जाए।

देवराज तिवारी
संयुक्त सचिव

---

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 31 जनवरी 1995

आदेश

विषय : आयल एण्ड नेचुरल गैस कार्पोरेशन लि० को कृष्णा गोदावरी अपतट गहन जल ब्लाक में 5770 वर्ग कि० मी० क्षेत्र के लिए पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस की मंजूरी।

सं० ओ०-12012/4/94—ओ० एन० जी० डी०-4 पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियम 1959 के नियम, 5 के खंड (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा आयल एण्ड नेचुरल गैस का० लि०, तेल भवन, देहरादून, को जिसे इसके पश्चात् ओ० एन० जी० सी० लि० कहा गया है कृष्णा गोदावरी अपतट गहन जल ब्लाक में 5770 वर्ग कि० मी० माप वाले क्षेत्र के लिए पेट्रोलियम की संभावना हेतु एक पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस की 2 मार्च, 1994 (2-3-1994) से 4 वर्ष के लिए स्वीकृति देती है।

लाइसेंस की स्वीकृति निम्नलिखित शर्तों पर है :—

(क) अन्वेषण लाइसेंस पेट्रोलियम के संबंध में होगा।

(ख) यदि अन्वेषण कार्य के दौरान कोई अन्य खनिज पाए गए तो ओ० एन० जी० सी० लि० पूर्ण ब्यौरों के साथ उसकी सूचना केन्द्रीय सरकार को देगा।

(ग) स्वत्व शुल्क (रायल्टी) निम्नलिखित दरों पर ली जाएगी :—

(i) क्रूड आयल

वर्ष 1993-94 के लिए 528/- रुपए प्रति मीट्रिक टन की बताई गई दरों पर "आन एकाउन्ट" भुगतान किया जाएगा बशर्ते रायल्टी के संबंध में अंतिम दर संबंधी अधिसूचना जारी होने पर इसका समंजन होगा। अनुवर्ती वर्षों के

लिए भुगतान केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर यथा नियत की गई दरों पर किया जाएगा ।

(ii) कन्डेन्सेट

481/- रुपये प्रति मीट्रिक टन अथवा ऐसी दर पर जो केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर नियत की जाए ।

(iii) प्राकृतिक गैस

प्राकृतिक गैस के संबंध में ये दरें केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर निर्धारित दर के अनुसार होगी ।

स्वत्व शुल्क (रायल्टी) की अदायगी, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय नई दिल्ली के वेतन तथा लेखा अधिकारी को की जायेगी ।

(घ) ओ० एन० जी० सी० लि० लाइसेंस के अनुसरण में प्रत्येक माह के प्रथम 30 दिनों में गत माह से प्राप्त समस्त अशोधित तेल की मात्रा कंडिंग हैड कन्डेन्सेट और प्राकृतिक गैस की मात्रा तथा उसका कुल उचित मूल्य दर्शाने वाला एक पूर्ण तथा उचित विवरण केन्द्रीय सरकार को भेजेगा । यह विवरण संलग्न अनुसूची "क" में दिए गए प्रपत्र में भर कर देना होगा ।

(ङ) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियम, 1959 के नियम 11 की अपेक्षाओं के अनुसार ओ० एन० जी० सी० लि० 50,000/– रुपए की धनराशि प्रतिभूति के रूप में जमा करेगा ।

(च) ओ० एन० जी० सी० लि० प्रतिवर्ष लाइसेंस के संबंध में एक शुल्क का भुगतान करेगा जिसकी संगणना प्रत्येक वर्ग किलोमीटर या उसके अंश के लिए जिसका लाइसेंस में उल्लेख किया गया हो, निम्नलिखित दरों पर की जाएगी :—

(1) लाइसेंस के प्रथम वर्ष के लिए 8/-रु०
(2) लाइसेंस के द्वितीय वर्ष के लिए 40/–रु० ।
(3) लाइसेंस के तृतीय वर्ष के लिए 200/–रु० ।
(4) लाइसेंस के चतुर्थ वर्ष के लिए 400/-रु० ।
(5) लाइसेंस के नवीकरण के प्रथम और द्वितीय वर्ष के लिए 600/– रुपए ।

(छ) ओ० एन० जी० सी० लि० को पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियम, 1959 के नियम 11 के उप-नियम (3) की अपेक्षाओं के अनुसार अन्वेषण लाइसेंस में उल्लिखित किसी क्षेत्र के किसी भाग को छोड़ देने की स्वतंत्रता, केन्द्रीय सरकार को दो माह की लिखित नोटिस देने के बाद होगी ।

(ज) ओ० एन० जी० सी० लि० केन्द्रीय सरकार को मांग किए जाने पर तत्काल तेल तथा प्राकृतिक गैस अन्वेषण के दौरान पाए गए समस्त खनिज पदार्थों के संबंध में भू-वैज्ञानिक आंकड़ों के बारे में एक पूर्ण रिपोर्ट गुप्त रूप से देगा तथा हर 6 महीनों में निश्चित रूप से केन्द्रीय सरकार को समस्त परिचालनों, व्यधन तथा अन्वेषण कार्यों के परिणामों के बारे में सूचना देगा ।

(झ) ओ० एन० जी० सी० लि० समुद्र के "तल" और या उसकी सतह पर आग बुझाने संबंधी निवारक उपायों की व्यवस्था करेगा तथा आग बुझाने हेतु हर समय के लिए उपकरण, सामान तथा साधन बनाए रखेगा और तीसरी पार्टी और/या सरकार को उतना मुआवजा देगा जितना कि आग लगने से हुई हानि के बारे में निर्धारित किया जाएगा ।

(ञ) इस अन्वेषण लाइसेंस पर तेल क्षेत्र (विनिमय और विकास) अधिनियम, 1948 (1948 का 53) पर पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस निगम, 1959 के उपबंध लागू होंगे ।

(ट) पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस के बारे में ओ० एन० जी० सी० लि० केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित एक ऐसे फार्म पर दस्तावेज भर कर देगा जो अपतटीय क्षेत्रों के लिए व्यवहार्य होगा ।

(ठ) ओ० एन० जी० सी० लि० खुदाई/अन्वेषी आपरेशनों/सर्वेक्षणों के दौरान एकत्र किए गए काष्ठी-मीट्रिक सतही नमूने, धारा और चुम्बकीय आंकड़े यथा सामान्य रूप से रक्षा मंत्रालय, नौसेना मुख्यालय को प्रस्तुत करेगा ।

(ड) ओ० एन० जी० सी० लि० समुद्री विज्ञान आंकड़ों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा ।

(ढ) संपूर्ण आंकड़े भारत में संकलित किए जाते हैं ।

(ण) यदि विदेशी जलपोत को सर्वेक्षण पर लगाया जाता है तो सर्वेक्षण करने से पूर्व उनका भारतीय नौसेना विशेषज्ञ अधिकारी दल द्वारा नौसेना सुरक्षा निरीक्षण किया जाएगा । भारत में ऐसे जलपोतों के आने के बारे में कम से कम एक माह पूर्व नोटिस दिया जाना चाहिए ताकि निरीक्षण दल की प्रतिनियुक्ति में सुविधा हो ।

(त) इस संबंध में ओ० एन० जी० सी० लि० द्वारा समुद्र विज्ञान संबंधी आंकड़ों की तैयार की गई संपूर्ण प्रति नौसेना मुख्यालय तथा मुख्य हाइड्रोग्राफर को निशुल्क उपलब्ध कराई जानी है ।

(थ) कच्चा आंकड़ा विदेशी कम्पनियों को नहीं सौंपा जाएगा तथा समस्त आंकड़ों को भारत में संसाधित किया जाएगा ।

(द) संविदायें/उप संविदायें एवार्ड करने संबंधी सूचना, यदि कोई हो तो इसे प्ररूप अनुसार (प्ररूप लाइसेंस) संविदा के एवार्ड के संबंध में आंकड़ा पेट्रोलियम मंत्रालय/आयल एण्ड नेचुरल गैस कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा ऐसी संविदा एवार्ड करने के 15 दिन के भीतर अथवा संविदा की गई/प्राधिकृत कम्पनियों द्वारा प्रचालन आरंभ करने के एक माह पूर्व रक्षा मंत्रालय/नौसेना मुख्यालय (डी० एन० आई०) को दी जाएगी ।

अनुसूची—क

अशोधित तेल, केसिंग कन्डेन्सेट तथा प्राकृतिक गैस के उत्पादन तथा उसके मूल्य सहित मासिक वितरण के लिए पैट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस

क्षेत्रफल

माह तथा वर्ष

क—अशोधित तेल

| कुल प्राप्त मी० टन की संख्या | अपरिहार्य रूप से खोये अथवा प्राकृतिक जलाशय को लौटाये मी० टन की सं० | केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित पैट्रोलियम अन्वेषण कार्य हेतु प्रयोग किये गये मी० टनों की संख्या | कालम 2 और 3 को घटाकर प्राप्त मी० टन की संख्या | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |

ख. केसिंग हैड कन्डेन्सेट

| प्राप्त किये गये कुल मी० टन की संख्या | अपरिहार्य रूप से खोये अथवा प्राकृतिक जलाशय को लौटाये मी० टन संख्या | केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित पैट्रोलियम अन्वेषण कार्य हेतु प्रयोग किये गये मी० टनों की संख्या | कालम 2 और 3 को घटाकर प्राप्त मी० टन की संख्या | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|

ग. प्राकृतिक गैस

| कुल प्राप्त घन मीटरों की सं० | अपरिहार्य रूप से खोये अथवा प्राकृतिक जलाशय को लौटाये गये घन मीटरों की संख्या | केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित पैट्रोलियम अन्वेषण कार्य हेतु प्रयोग किये गये घन मीटरों की संख्या | कालम 2 और 3 को घटाकर प्राप्त घन मीटरों की संख्या | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |

एतद्द्वारा मैं श्री———————————————सत्यनिष्ठापूर्वक घोषणा एवं पुष्टि करता हूं कि इस विवरण में दी गई सूचना पूर्ण रूपेण सत्य और सही है, उसे सही समझते हुए मैं शुद्ध अन्तःकरण से सत्यनिष्ठा से यह घोषणा करता हूं।

हस्ताक्षर———————

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 6 फरवरी 1995

सार्वजनिक सूचना सं० 303/43/94–एफ० (एफ)

सूचना और प्रसारण मंत्रालय की दिनांक 25 जनवरी, 1995 की सार्वजनिक सूचना सं० 303/43/94–एफ (एफ) की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है जिसके माध्यम से राष्ट्रीय फिल्म समारोह विनियमों को अधिसूचित किया गया था ।

2. उल्लिखित विनियमों को एतद्द्वारा नीचे दिए अनुसार संशोधित किया जाता है :—

(क) राष्ट्रीय फिल्म समारोह विनियमों में धारा–13 को निम्न प्रकार से पढ़ा जाएगा :—

फिल्म समारोह निदेशालय में प्रिन्ट सहित आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि, उस वर्ष के मार्च मास का अंतिम कार्य दिवस होगा जिसमें पुरस्कार घोषित किए जाने हैं ।

(ख) सिनेमा पर श्रेष्ठ लेखन हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार संबंधी विनियमों की धारा–8 को निम्न प्रकार से पढ़ा जाएगा :—

दोनों पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियां प्राप्त करने की अंतिम तिथि, उस वर्ष के मार्च मास का अंतिम कार्य दिवस होगा जिसमें पुरस्कार घोषित किए जाने हैं ।

पी० गोपालन
डेस्क अधिकारी

---

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1995

No. 91-Pres/95.—The President is pleased to approve the acts of conspicuous gallantry :—
acts of conspicuous gallantry :—

1. 2769281 Company Havildar Major Jagtap Shivaji Balu, 6 Maratha Light Infantry. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 28 January 1994)

On 28 January 94, based on specific information about the presence of a few militants in village Nayadagam, Chattubus and Farashgund in Jammu and Kashmir, 6 Maratha Light Infantry launched a cordon at 0700 hours.

Company Havildar Major Jagtap Shivaji Balu was the Commander of the search party detailed to check a cluster of houses. While searching one of the houses, when the Non Commissioned Officer reached the top floor, his party came under heavy fire of militants hiding under wood and grass kept there, wounding him in the first burst. Undeterred, he rushed forward and killed one of the militants on the spot and there after fell down due to another burst fired at him by the other militants. Before laying down his life he foiled the escape bid of two other militants who were later killed by his troops in the ensuing fire fight. The brave soldier in face of heavy odds and extreme danger displayed an outstanding example of courage, grit and devotion to duty.

Company Havildar Major Jagtap Shivaji Balu, thus, displayed conspicuous bravery, courage and laid down his life fighting the militants.

2. Second Lieutenant Rishi Ashok Malhotra (*Posthumous*) (IC-52571)

Maratha Light Infantry.

(Effective date of the award : 18 May 1994).

On the 18th May 1994 Second Lieutenant Rishi Ashok Malhotra was tasked to search and destroy an Anti National Elements (ANE) hideout in the area of Dal Dramman in Doda District of Jammu and Kashmir. Second Lieutenant Rishi Ashok Malhotra —launched the operations with one platoon and selected an extremely difficult route in high altitude jungle terrain to achieve surprise After covering a distance of 30 kilometres over two consecutive nights, the young officer cordoned the militant hideout during the early morning hours of 20 May 1994. He then moved towards the hideout and was engaged with very heavy volume of fire. Unmindful of his personal safety and displaying valour of an extremely high order. this young officer manoeuvred towards the hideout. An intense firefight with the militants ensued at close quarters during which the officer's actions were conspicuously aggressive and exemplarily determined. The officer received bullet wounds to the chest while covering the last few yards to the hideout. Despite being gravely injured, he reached the hideout and killed two ANEs at point blank range before succumbing to his wounds.

Second Lieutenant Rishi Ashok Malhotra, thus, displayed conspicuous bravery exceptional courage and made the supreme sacrifice while fighting the anti-national elements.

3. 2975200 Havildar Shiv Narayan Singh, 27 Rajput. (*Posthumous*)

(Effective date of award : 22 May 1994)

At 0400 hours on 22 May 94, based on specific information, Commander's Quick Reaction Team under Command of Lieutenant Colonel Harvinder Singh Lacshar, was launched at village Widdipura in J & K. Suspected houses of the Anti National Elements (ANE's) were cordoned and searth began at 0515 hours. During search of a suspected house, two ANE's hiding on the roof opened fire at troops. Havildar Shiv Narayan Singh received Gun Shot wound in his left chin. Thereafter, one of the militants jumped from the roof and opened fired on Havildar Shiv Narayan Singh. Despite being critically injured, he displaying raw courage, continued firing on the militants and killed both of them. He was immediately evacuated to Advance Dressing Station, where he succumbed to his injuries.

Havildar Shiv Narayan Singh, thus, displayed conspicuous bravery, courage and laid his life fighting the militants.

G. B. PRADHAN,
Director

---

No. 92-Pres 95.—The President is pleased to approve the award of 'Shaurya Chakra' to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. Shri Ravindra Pratap Singh Satna, Madhya Pradesh. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 18 January 1993).

On 18-1-1993, Smt. Shyamwati and her daughter Smt Montoo had gone to the market in the night to fetch some household things. While returning home, five anti-social elements fell upon Montoo near the house of Revenue Inspector,

Shri S. M. Srivastava, with the intention of molesting her. Montoo shouted for help and tried to free herself from the clutches of the anti-social elements. In order to save her daughter's honour, Smt. Shyamwati also started shouting for help. At that time, 22 year old Ravindra Pratap Singh, who was a student, happened to pass by on his bicycle. Seeing the anti-social elements trying to outrage the modesty of Smt. Montoo, he stopped and challenged them. He asked them to leave Smt. Montoo alone. The anti-social elements thereupon left Smt. Montoo and turned to Ravindra Pratap Singh. They were armed and also stronger in number. Undaunted, Shri Ravindra Pratap Singh fought with them at the risk of his own life in order to save the honour of a married woman. When this fight was going on, Smt. Shyamwati and her daughter hastened to their colony and alerted the people there. When they returned to the scene of the incident, they found that Ravindra Pratap Singh was laying on the ground bleeding profusely. The anti-social elements had stuck a knife in his stomech. Blood was also coming out of his nose and bleeding profusely. The anti-social elements had stuck a the spot. The anti-social elements were later identified.

Shri Ravindra Pratap Singh displayed exemplary courage and laid down his life in order to save the honour of a married woman.

2. Major Kamal Kalia (JC-35555), (*Posthumous*)
Madras Regiment.

(Effective date of the award : 27 March 1993).

Major Kamal Kalia, Company Commander D Company was operating in Operation Rhino against United Liberation Front of Assam, (ULFA) militants in Districts of Tinsukia and Dibrugarh in Assam, where he had established in excellent intelligence net-work. On acquiring intelligence about a top ULFA leader Prakash Dutta, Finance Secretary of Thinsukia District, he apprehended him on 05 April 1992. On the basis of information supplied by the captured militant the ULFA strong-hold of Lakhipathrar was raided. Later, he was able to force 204 ULFA cadre led by Kamala Moran, Bojrakantto Mech, Lakhi Deori and Umesh Moran to surrender alongwith large quantity of arms and ammunition.

On 27 March 1993 Major Kamal Kalia and his team raided another location thwarting an ULFA meeting scheduled to be held at Nadang. In the raid nine militants alongwith propaganda material and memorial cut-outs were captured.

On 09 April 1993 his sources informed about move of another top ULFA militant Rantu Neog in a Maruti Car on road Moran-Dibrugarh. Major Kamal Kalia immediately activated his team and got into hot pursuit. While tailing the top militant, Major Kamal Kalia was fatally knocked by an oncoming civil bus.

Major Kamal Kaslia, thus, displayed selfless devotion to duty, dedication, tenacity and spirit of sellf sacrifice.

3. Squadron Leader Raj Shekhar Mehta,
(17212) Administration.

(Effective date of the award : 20 September 1993).

Squadron Leader Raj Shekhar Mehta was commissioned in Administration branch of IAF on 28 May 1993. He is Deputy Chief Administration Officer at Air Force Station Tezpur.

On 09 September 1993, a herd of wild elephants entered the camp of Air Force Station Tezpur and lodged themselves in dense forest on the Southern side of the airfield, close to the runway. Attempts to chase them out of the camp by helicopters were futile as the dense forest not only provided them cover but also made it nearly impossible to locate their position. The elephants caused extensive damage to the communications and electric cables, airfield lighting and security fence. Since the elephants were very close to the runway, the flying was adversely affected. On 20 September 1993, it was decided to drive them by organising a beat. Squadron Leader Mehta, the then Station Security Officer was assigned the task. A group of 35 men was assigned to him for this job. The group armed with rifles and drums entered the dense forest from Eastern side at around 0930 hrs. By 1130 hrs, it had combed almost 3/4 of the jungle and chased the herd to one side. Squadron Leader Mehta led his men, encouraging them constantly during the entire operation. At around 1130 hrs, he was suddenly attacked by an elephant and thrown on the ground. Despite the shock, Sqn Ldr Mehta retained his cool and dragged himself away from the direction in which the same elephant was stamped and crushed by the elephant before it moved away from him. Even though seriously injured, he crawled to a distance of nearlly 20 feet, picked up his portophone and guided the beat party to chase the herd out. Only on completion of the task, he callled up the party for his own rescue. Squadron Leader Mehta after the first aid was rushed to the local Base Hospital and later shifted to the Eastern Command Hospital at Calcutta for major surgery.

Squadron Leader Raj Shekhar Mehta, thus, displayed courage, determination, initiative and leadership qualities of exceptionally high order.

4. JC-181906 Naib Subedar Keshar Singh, (*Posthumous*)
Assam Rifles.

(Effective date of the award : 5 November, 1993).

At 0300 hours on 05 November 1993, based on an information a raiding party under Naib Subedar Keshar Singh and 18 other Ranks marched off to the hide-out area of undergrounds in Southern part of Mizoram. At 0600 hours the raiding party reached the vicinity of the hide-out location and carried out last minute briefing of the raiding party. The hide-out consisted of Two Jhoom huts in the Kheti area. Naib Subedar Keshar Singh placed various stops on the flanks and he himself led the assault group, advancing in the direction of the hide-out and tried to catch one of the undergrounds under his grip, who came out suddenly from the hut with his weapon. In the ensuring scuffle, the undergrounds fired his weapon and a bullet hit Naib Subedar Keshar Singh on his neck. Subsequently he succumbed to the injuries on the spot. It was all due to Naib Subedar Keshar Singh's untiring efforts, bold planning and leadership of a high order which culminated in successful execution of the task resulting in two undergrounds being killed and recovery of two assault rifles, ammunition and 6 improvised Explosive Device. Two undergrounds were also captured.

Naib Subedar Keshar Singh, thus, displayed indomitable courage and spirit of self sacrifice.

5. JC-192605 Naib Subedar Bhagwati Prasad,
Assam Rifles.

(Effective date of the award : 27 December, 1993).

Naib Subedar Bhagwati Prasad was ordered to establish a mobile check post with 20 other ranks on 27 December 1993 near Longkhim post in Nagaland. Accordingly he took his team and after detailed reconnaissance selected a tactically viable position to establish the mobile chack post on the road Mokokchung-Tuensand by 1800 hours.

At about 2040 hours two vehicles (one Tata truck and one Jeep) approached the mobile check post from the direction of Mokokchung. Approximately 15 insurgents were travelling in these vehicles. When they were asked to stop, the insurgents opened fire and attacked the check post. Naib Subedar Bhagwati Prasad immediately took stock of the situation and unmindful of the danger to himself reacted with speed, determination and courage to rally his men and tackle the insurgents effectively, who were using automatic weapons. Due to his inspiring leadership his troops retaliated most effectively. In the struggle, they fought with dogged determination and killed five insurgents and apprehended one. They also captured six Rifles alongwith a large quantity of ammunition.

Naib Subedar Bhagwati Prasad, thus displayed courage, determination, initiative and leadership qualities of exceptionally high order.

6. Major Bhupender Singh (IC-35016), (*Posthumous*)
Engineers.

(Effective date of the award : 4th January 1994).

Major Bhupender Singh, Officer commanding 99 Road Construction Company (GREF) was assigned the task of constructing five Bailey bridges on road Khunnabal Pahalgam in J & K. On 04 January 1994 Major Bhupender Singh

went on a recce of the bridge sites. At Village 'Akkar', the recce party ran into an ambush by anti national elements (ANEs) who were lying in wait at a road block created by them. The party was fired at from all around from a very close range by automatic weapons by an estimated strength of 100 ANEs. Major Bhupender Singh showing great presence of mind deployed his troops without any loss of time and returned the fire. After a prolonged exchange of fire, he successfully broke the ambush, removed the road block and extricated his party and went ahead. On 17 January 94, when he was returning to his Headquarters after clearing the snow at Banihal Tunnel on the Jammu-Srinagar National Highway, he was kidnapped by the ANEs enroute. While at captivity he remained alert for chances of escape and on 19 January, 1994 wrestled an AK 47 Rifle from one of his captors. But before he could fire, his captors numbering 10 to 12, pounced upon him and inflicted severe injuries on his person. Subsequently, he was kept tied and taken from place to place and on the morning of 23 January 1994 he was shot dead.

Major Bhupender Singh thus, displayed unflinching devotion to duty, exemplary courage at the cost of his own life.

7. 2680419 Grenadier Karnail Singh, (*Posthumous*)
Grenadiers.

(Effective date of the award : 10 February, 1994).

On 10 February 1994, a Platoon of 3 Grenadiers was tasked to carryout selective search in village Sutakohaj in Jammu and Kashmir. Grenadier Karnail Singh was performing the duties of Light Machine Gunner. Approximately at 1400 hours near village Rajpura, the platoon came under effective fire of AK-47s and UMGs fired by 6 to 8 anti national elements (ANE's). Grenadier Karnail Singh immediately returned the fire. In the meanwhile the militants were joined by 30 to 35 ANEs including some foreign mercenaries and pinned down the platoon with heavy automatic fire from the surrounding heights. Despite being outnumbered under heavy and accurate automatic fire and Grenadier Desh Raj, the other Light Machine Gunner, having passed away, Grenadier Karnail Singh moved his Light Machine Gun to one advantageous position to the other, thus relieving pressure on the other personnel of his platoon and rendering ANEs fire ineffective. This fire fight continued for three hours. While moving a third time, Grenadier Karnail Singh was shot in the face and made the supreme sacrifice. However, his action enabled the other members of the platoon to extricate themselves from effective ANE's fire.

Grenadier Karnail Singh, thus, displayed boldness, and conspicuous courage in the face of heavy odds and made the supreme sacrifice to protect the unity and integrity of the Nation.

8. 3971557 Havildar Tara Chand, (*Posthumous*)
Dogra.

(Effective date of the award : 17 February, 1994).

On information about the presence of some armed anti national elements in villages of Budpura, Warapura and Mula Bangil in Baramulla District of Jammu and Kashmir, a cordon and search operation was launched on 17 February, 1994. At about 0800 hours a search party under Havildar Tara Chand, Officiating Platoon Commander while passing close to Southern Mohalla of Warapura, came under fire from a house. Havildar Tara Chand directed his party to surround the house and take cover. He himsellf tried to silence the firing anti national element. During this movement he sustained a gun shot wound on right leg. Injury could not stop the gallant Non Commissioned Officer fighting back. He closed into the house and with quick reflexes shot dead the firing anti national element from a close quarter. In the meantime, he observed another militant armed with a Universal Machine Gun jumping from rear window fleeing to a safer place. With great courage and valour Havildar Tara Chand, though being wounded, chased and shot dead the second militant. However, he was shot at on the chest by a third militant hiding in neighbouring house and he succumbed to injuries on the spot.

Havildar Tara Chand, thus, displayed dogged determination, exemplary leadership and spirit of self sacrifice.

9. 13689178 Guardsman Taiyenjam Deban Singh,
Guards.

(*Posthumous*)

(Effective date of the award : 2 March 1994).

27 Rajput alongwith a company of 5 Guards was instructed to lay cordon around South Sopore in Baramulla District of Jammu & Kashmir. The D Company of 5 Guards was earmarked to cordon the Hatishah Mohalla which has an intricate network of narrow lanes and by-lanes.

Undettered by this disadvantage, the company set out to lay stops. As the last stop comprising of Naib Subedar Jayant Singh, Naik Sobi Chand and Guardsman Taiyenjam Deban Singh approached the further end of the cordon, the latter, who was the scout, saw a few ladies coming out of the house. The lane being narrow, Guardsman Taiyenjam Deban Singh made way for the ladies to come down the stops, not realising a well orchestered ploy. Anti national elements who had been hiding behind the ladies at the entrance door of the house opened fire at a point blank range injuring Guardsman Taiyenjam Deban Singh in the abdomen.

Though gravely injured, the Guardsman moved out of the line of fire and after taking adequate precautions not to injure the ladies, engaged the militants and hit one of them. He then chased the injured militant into the house and with one burst fired from his weapon, killed him. Seeing this, the remaining anti national elements were unnerved and fled leaving behind the injured. Guardsman Taiyenjam Deban Singh who then fell unconscious was immediately given first aid and evacuated to the Base Hospital by helicopter, where he succumbed to his injuries.

Gaurdsman Taiyenjam Deban Singh, thus, displayed act of galantry, devotion to duty and made the supreme sacrifice in fighting the anti-national elements.

10. G/155977F Supdt B/R GDE-1,
Sree Kumar P. BRDB.

(Effective date of the award : 13 March 1994).

Supdt. Sree Kumar was deployed on formation cutting on Tate-Menchuka road. On 13 March 1994, while Shri Sree Kumar was in the office cum residence of Shri R N Singh assistant Engineer, in the night, at about 2230 hrs, some armed dacoits sneaked into the camp with an intention to loot the Govt. money. They knocked at the door of Shri Sree Kumar. Sensing danger, he carefully opened the door and found about 4 to5 armed dacoits. They seemed to be local tribals holding 12 bore guns. The dacoits pushed him aside to enter the room. Shri Sree Kumar fought bravely, resisted them and shouted for help. In the scuffle, one of the dacoits fired at him from point blank range and injured him critically on his right thigh. Undeterred, Shri Sree Kumar continued his fight, unmindful of the injury and danger to his life. He was successful in pushing the dacoits out of his room. In the meantime, in hearing his shouts and the gun fire, Shri R N Singh and others rushed to his room. The dacoits had fled from the scene by that time.

Shri Sree Kumar, thus, displayed gallantry, devotion to duty and successfully prevented the gang of armed dacoits from looting Govt money.

11. Colonel Ajit Singh (IC-32135),
Mechanised Infantry.

(Effective date of the award : 14 March 1994).

On the evening of 14 March 1994 while returning to his Battalion Headquarters from Dimapur, Nagaland, Colonel Ajit Singh was heavily fired upon from a very close range by approximately eighteen Undergrounders who had established an ambush for him. Colonel Ajit Singh himself gathered his close protection personnel and charged towards the undergrounds firing on him. He was injured on his right thigh. Disregarding the injury, he continued till he was injured on his right arm again. The close protection personnel dissuaded him from moving further but he pressed on till the undergrounders fled away. In the exchange of fire, the undergrounders made an escape in darkness. The action taken by Colonel Ajit Singh saved the lives of the entire vehicle column and personnel travelling in it. Colonel Ajit Singh was re-

moved to the hospital seriously injured. The Undergrounders later in their reports published in Daily newspapers expressed jubilance that Colonel Ajit Singh was injured/killed. But due to his own swift action Colonel Ajit Singh survived a very attempt on his life besides saving the column from heavy loss.

Colonel Ajit Singh, thus, displayed inspiring leadership and gallantry much beyond the call if duty.

12. Captain Pradeep Bhatia (IC-43872), Mahar.

(Effective date of award : 15 March 1994).

On 15 March 1994, Captain Pradeep Bhatia was detailed as incharge of a platoon strength escort party accompanying Number 2 Irish Army Transport Company's logistic convey in Somalia. The convoy was on its way from Mogadishu to Baidoa, a distance of about 250 kilometers, when it was ambushed by a large party of Somali militiamen. Following the pre-rehearsed drills, the leading vehicle party assaulted the militia positions on the South. Captain Bhatia moved from the right and tried to assault with an aim to ease pressure on the leading party on the South. The plan succeeded with the full volley of militia fire directed at Captain Bhatia's party. He asked his MMG gunner to keep them pinned down and himself brought down accurate fire by leaning out of the window of the speeding Nissan in which his party was mounted. As soon as he closed in, he jumped out of the vehicle and charged at the Heavy Machine Gun (HMG) killing the main gunner with his AK-47 rifle. When second gunner tried to replace the dead gunner, Captain Bhatia pounced on him and struck him unconscious with the butt of his weapon. However, he himself came under intense fire. But he assaulted, killing one militiaman and injuring one more with fire from his weapon. This relentless assault led by Captain Bhatia on the militia ambush finally succeeded with the militia beating a hasty retreat into the jungle. In the encounter, 15 militiamen were killed and 20 captured and a large number of arms and ammunitions were recovered.

Captain Pradeep Bhatia, thus, displayed bravery, courage and devotion to duty in his fight against the Somali militiamen.

13. JC-155781 SUBEDAR DHARAM SINGH, Mahar.

(Effective date of the award : 15 March 1994)

On 15 March 1994, Subedar Dharam Singh was part of an escort accompanying Number 2 Irish Army Transport Company logistic convoy. The convoy was moving from Mogadishu to Baidoa, a distance of more than 250 kilometres when it was ambushed by Somali militiamen near village Sherry. Subedar Dharam Singh's party could not progress due to heavy volume of fire from pre-decided position. He shot one militiaman armed with an AK-47 and was about to open fire on a group of four militiamen who were a little distance way when his magazine became empty. Unruffled and realising the danger of using a hand grenade the quick thinking JCO threw a stun grenade at the retreating militia. Taking advantage of their stunned state he rushed and jumped on the nearest militiamen overpowering him and snatching away a G3A3 automatic rifle. He then quickly dismounted and assaulted from a flank under the covering fire from the Light Machine Gun. In this assault he captured two more armed militiamen one of whom was injured.

Subedar Dharam Singh, thus, displayed conspicuous gallantry and indomitable spirit in his fight against the Somali militiamen.

14. 2874983 NAIK CHANDERPAL SINGH, Rajputana Rifles (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 15 March, 1994).

On 15th March 1994, cordon and search operation was launched in village Tulakhwan District Anantnag in Jammu and Kashmir. A company was tasked to carry out the search of houses from west-end of the village. While the search was in progress, Naik Chanderpal Singh located a hide-out under the floor of a house with its entrance through the base of an almirah in the wall.

The moment Naik Chanderpal Singh lifted a plang covering entrance to the hide-out, an anti national element came out of the hide-out, lobbed a hand grenade in the room and, fired a burst at Naik Chanderpal Singh. Naik Chander Pal Singh suffered multiple grenade splinter injuries and gun shot wounds and started bleeding profusely but, this did not stop him from covering the movement of other troops out of the room. Naik Chanderpal Singh undaunted and undeterred, though seriously wounded, shot the militant dead the moment he again came out of the hide-out, firing indiscriminately at the troops. One rifle, four magazines and one hundred and twenty ammunition were recovered from the dead body of the militant.

Naik Chanderpal Singh, thus, displayed conspicuous bravery, gallant act and made the supreme sacrifice in fighting the militants.

15. MAJOR RATAN KUMAR SEN (IC-36375), Armoured Regiment.

(Effective date of the award : 17 March 1994)

On 17 March 1994 while officiating as Commanding Officer 2 Rashtriya Rifles, Major Ratan Kumar Sen was informed by Headquarters 1 Sector Rashtriya Rifles that 96 Battalion of Border Security Force was ambushed by foreign mercenaries near Ashashpor, a satellite locality of Anantnag town in Jammu and Kashmir. Major Ratan Kumar Sen immediately galvanised the entire Battalion and rushed to the spot. He was able to extricate all troops of Border Security Force to their permanent location and also assisted in evacuation of casualties. While returning back, the leading platoon came under heavy volume of fire from Anti National Elements at Janglat Mandi and Achabal Bus Stand in Anantnag town. The intense fire pinned down the troops and they were not able to make any headway. The platoon under personal supervision of Major Ratan Kumar Sen could move forward to Achabal Bus stand to extricate troops who were pinned down by heavy and effective fire. He crawled and moved to the forward troops and covered the lanes by automatic fire and himself lobbed grenades to silence the anti national elements. Major Ratan Kumar Sen leading the troops could barely move 15–20 metres from one cover to another when he came under heavy volume of fire. At this spot Major Ratan Kumar Sen was hit by a sniper shot in right temporal region and he fell down but was able to crawl to a safer place. He continued to fire and crawl until he became unconscious. He was later evacuated to a safer place.

Major Ratan Kumar Sen, thus, displayed strong will, dedication and courageous action, much beyond the call of duty.

16. DINESH CHANDER SARKAR, (*Posthumous*) GO-1878-W Assistant Engineer (Civil),

(Effective date of the award : 19 March 1994).

Assistant Engineer (Civil) Dinesh Chander Sarkar was detailed as Officer-In-Charge of maintenance and snow clearance operations on Karu-Tangtse (K-T) Road in the South-East of Leh. This road, which passes through Changla pass at an altitude of 17350 feet, is the only communication to Indo-China Border.

On 19 March 1994, a heavy snow fall and snow drift blocked KT Road between KM 43 to 47. GREF personnel and labourers alongwith two dozers were deployed for snow clearance. Since the work-site was avalanche prone, Shri Sarkar, unmindful of the danger to his personal safety, decided to lead the snow clearance operation.

At about 1610 hrs, all of a sudden a massive avalanche spreading over an area of 150 to 200 meters unleashed from the top of the mountain near KM 46. Shri Sarkar was almost at the tail end of the avalanche at that time. GREF personnel and CP labourers were spread out in the complete snow clearance area. No sooner Shri Sarkar heard the warning of the avalanche, he instead of running for a safe shelter which was barely a few feet away from him, ran towards the working party to drive them out to a place of safety. In the process he himself got buried under the snow slide laying down his life,

though he succeeded in saving the life of other team members.

Assistant Engineer (Civil) Dinesh Chander Sarkar made the supreme sacrifice while executing his task, to ensure that the lives of the other members of the team is saved.

17. G/170948K OVERSEER PYARE LAL, BRDB
(*Posthumous*)

(Effective date of the award : 19 March 1994)

Overseer Pyare Lal was deployed as works-in-charge of snow clearance operation of Karu-Tangtse (K-T) road on the south-east of Leh. This road is the only communication to Sino-Indian Border which passes through Changla Pass at an altitude of 17350 feet.

On 19 March 1994, a heavy snow fall and snow drift blocked K-T Road between KM 43 to 47. Two dozers alongwith GREF personnel and labourers were deployed for snow clearance operation. The area of operation being extremely vulnerable with massive accumulation of snow and snow drifts continuing unabated due to wind effect, the dozer operation become a challenging task. Shri Pyare Lal showing his indomitable spirit climbed on the dozer operated by Sahabudin Ansari and started giving directions to the operator for speedy clearance.

At about 1610 hrs, a massive avalanche triggered off from the mountain top near KM 46 when the snow clearance operation was in progress. Shri Pyare Lal did not try to run to safety and instead continued guiding the dozer operator to steer the dozer to a safer place. Undeterred, he could save the dozer operator and the dozer from the main thrust of the snow slides. The dozer, though pushed 100 ft down did not suffer major damages. However, in the process, Shri Pyare Lal was hit by the snow slide and got buried in the snow resulting in his death.

Overseer Pyare Lal, thus, displayed conspicuous gallantry, selfless service, and made the supreme sacrifice of his life in performance of duty.

18. G/172411K OPERATOR EXECAVATING MECHINERY SAHABUDDIN ANSARI BRDB

(Effective date of the award : 19 March 1994)

Operator Excavating Machinery Sahabuddin Ansari was engaged in snow clearance in Karu-Tangtse (KT) road south east of Leh alongwith his Dozer. This road is the only communication to Sino-Indian border and passes through Changla pass at an altitude of 17350 ft which has to be kept open even during peak winters.

On 19 March 1994, KT Road got blocked between Km 43 to 47 due to heavy snow fall and snow drift, At about 1610 hrs, when the snow clearance was in progress near Km 46, a massive avalanche got unleashed from the mountain top all of a sudden. Even having had the warning of the avalanche, OEM Sahabuddin Ansari did not leave his dozer and run for safety. Undeterred, he continued steering the dozer under the guidance of Overseer Pyare Lal to bring it to a safer place. The mass of the avalanche being colossal made it further difficult for the operator to steer clear of the danger zone. In the meantime, the avalanche hit the dozer, though with moderately lower impact and threw away Overseer Pyare Lal who was guiding the dozer. OEM Sahabuddin Ansari even at this stage did not leave the dozer and steered it towards the valley. The dozer got stuck at about 100 ft down the valley and OEM Sahabuddin Ansari thrown away, but miraculously saved with minor injuries.

Operator Excavating Machinery Sahabuddin Ansari, thus, displayed gallantry with utter disregard to his personal safety in saving the Govt. property.

19. 4254834 LANCE HAVILDAR THEOPHIL TIRU, BIHAR.
(*Posthumous*)

(Effective date of the award : 28 March 1994)

On 28 March 1994 Lance Havildar Theophil Tiru alongwith his comrade Lance Naik Bikram Tudu was entrusted with the task of escorting a UNICEF Vehicle to coordinate a relief mission in Kismayu, the strategic Southern Port town of Somalia as part of UNOSOM II. While moving from one compound to another the vehicle was signalled to halt by two armed Somalis. Sensing danger to the UNICEF staff, Lance Havildar Theophil Tiru jumped out of the slowing vehicle to challenge the miscreants. Almost simultaneously the vehicle came under fire from three directions by twelve to fourteen armed Somalis. Lance Havildar Theophil Tiru was hit on the thigh. His Comrade, Lance Naik Bikram Tudu also returned the fire but was felled by a hail of bullets. Though Lance Havildar Theophil Tiru with utter disregard to his personal safety, thwarted the evil designs of armed Somalis by effectively engaging them with fire. Only after Lance Havildar Theophil Tiru was shot through his jaw and head did the Somalis escape the wrath of the gallant Indian.

Lance Havildar Theophil Tiru, thus, displayed bravery, courage, devotion to duty and spirit of self sacrifice.

20. G/172033W OPERATOR EXCAVATING MACHINERY SURENDER SINGH, BRDB.

(Effective date of the award 4 April 1994)

Operator Exavating Machinery Surender Singh was deployed at Km 32 on road Leh-Chalunka as dozer Operator for snow clearance operation. The road Leh-Chalunka is the highest motorable road in the world and it the only life line for the Indian troops deployed in Siachen Glacier, Karakoram Pass and Shyok Valley.

In the night on 04 Apr 94, the road stretch between Km 25 to 39 of road Leh-Chalunka experienced heavy snow fall causing 8 to 10 feet snow accumulation on the road surface. About 20 to 25 Army and Civil vehicles with troops and civilian passengers were stranded in the stretch. OEM Surender Singh was ordered to clear the road with his dozer. He pressed his Dozer into service and started clearing road despite heavy wind, inhospitable weather and risk of life. Suddenly, a huge snow slide slipped from the hill top and burried the dozer and dozer operator upto the neck. OEM Surender Singh was immediately rescued by his helpers. He was advised to take rest and medical aid. OEM Surender Singh ignored the advice and continued negotiating the dozer despite imminent threat of snow slides, avalanches so as to clear the road for move of stranded vehicles and men. OEM Surender Singh cleared the complete road stretch within twenty four hours.

Operator Excavating Machinery Surender Singh, thus, displayed courage determination and dedication beyond the call of duty with utter disregard to his personal safety.

21. GO 2364L ASSISTANT ENGINEER (CIVIL) MANOHAR DATT BAWARI, BRDB.
(*Posthumous*)

(Effective date of the award : 15 April 1994).

Assistant Engineer (Civil) Manohar Datt Bawari was deployed as Officer In Charge for formation cutting work on Road Sanklang-Toong in North Sikkim.

On 15 April 1994, Shri Bawari was supervising blasting works on a stretch with vertical rock face and deep gorge. He was personally preparing the ring main circuit for blasting of hill rock face. While doing so, some boulders started rolling down from the hill side at about 10—45 hrs. Undaunted by the danger of shooting stones and boulders, Shri Bawari cautioned his workers and instructed them to move to safer areas, while he himself continued to complete the job with utter disregard to his own safety. Suddenly a big portion of the rock slid down and fell straight on him, burying him alive, causing grave head injuries and resulting in his instantaneous death.

Assistant Engineer (Civil) Manohar Datt Bawari, thus, displayed a high sense of responsibility, exceptional bravery personal qualities of leadership and sacrificed his life while performing his duties in the best traditions of Border Roads Organisation.

22. Captain Rajiv Kumar Joon (IC-50443), Grenadiers.

(Effective date of the award : 16 April, 1994).

In an operation in the Kandi belt, encompassing Killar and Thiarin of Pulwama District of Jammu and Kashmir on 16 April 1994. Captain Rajiv Kumar Joon, Officiating Company Commander raided a suspected hideout. As this party approached the suspected hideout, two militants fired and tried to escape taking advantage of thick vegetation. Captain Rajiv Kumar Joon with least regard to his personal safety, immediately out flanked and sealed off the route of escape. The militants got trapped in a nearby Nallah but took cover of the boulders and started firing at the troops. Undettered, Captain Rajiv Kumar Joon, further closed in, finally charged at and killed both the militants and recovered one Rifle alongwith magazines and ammunition.

During second phase of the same operation, Captain Rajiv Kumar Joon combed towards village Thiarin in seven prongs. Haing seen some suspicious movements, once again Captain Rajiv Kumar Joon dashed towards Thiarin to draw fire. The militants reopened and tried to escape towards the thick jungles. Despite grave danger to himself, Captain Rajiv Kumar Joon immediately chased the group of militants. Despite the volley of automatic fire, Captain Rajiv Kumar Joon kept closing in with his handful of men and once again finally assaulted the group. Three hard core militants were killed and one injured, including a dreaded, self styled company commander of Hizbul Mujahideen.

Captain Rajiv Kumar Joon, thus, displayed bravery, courage and devotion to duty in his fight against the militants.

23. 13741695 Naik Yograj Singh, Jammu and Kashmir Rifles. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 20 April 1994).

Based on specific intelligence about the presence of some armed anti notional elements (ANE) in the village Wangum Jammu and Kashmir, a cordon and search operation was launched in early hours on 20 April 1994. At about 0600 hours a patrol under Naib Subedar Satish Kumar was detailed to enforce curfew in the village. Naik Yograj Singh, noticed two armed militants trying to break the cordon Stealthily. With utter disregard to his personal safety, the Non Commissioned Officer ran after the ANEs. After relentless pursuit, the militants sought refuge in the house of Ghulam Nabi Wani S/o Abdul Samad Wani. The patrol proceeded to encircle his house. With utter disregard to his personal safety, the Non Commissioned Officer ran upto the house, pushed open a window and shot dead one of the militants later identified as Gulam Mohammad Mir. The second ANE, however, got the opportunity of firing at the brave soldier and hail of bullets riddled the chest of the Non Commissioned Officer. Naik Yograj Singh before making the supreme sacrifice gave signal to his partol about the presence of other ANE in the house who was later killed and identified as an Afghan mercenary.

Naik Yograj Singh, thus, displayed rare courage, devotion to duty and spirit of self sacrifice.

24. JC-192485 Subedar Ganga Ram, Mahar. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 22 August 1994).

On 22 August 1994, Subedar Ganga Ram of 5 Mahar was detailed as Commander to escort an important convoy proceeding from Baledogle to Burleego to carry out work as part of ongoing process to rebuild the war ravaged and derelict infrastructure of Somalia. When the convoy was passing though general area of Burleego, it came under heavy fire from the North of the road which was immediately replied to . . In the initial onslaught itself three Indian troops were killed and eight injured. Subedar Ganga Ram immediatelly took stock of the situation and realised that they had been heavily outnumbered. He directed the driver Lance Naik Sadagar Singh to take the most covered approach and despite the windscreen of the vehicle having been shattered due to a volley of bullet hits he managed to reach a position of advantage. In the first daring assault led by him. Subedar Ganga Ram was able to retrieve the UNOSOM civil convoy vehicles and immediately proceeded to attack the enemy. However, the enemy fired at the Toyota Pick up with Machine Guns and ZU-23 twin barrel anti aircraft gun. At this stage the driver Lance Naik Sadagar Singh was hit in the right thigh and Subedar Ganga Ram was himself wounded in the left arm. He got out of the vehicle and charged the enemy position while firing with his carbine. Subedar Ganga Ram at this stage was shot for the second time, now in the chest and fell on the ground but despite that and again got up and charged. He was hit by another burst in his chest this time proving fatal. At the end of the operation and interrogation of captured militimen it was confirmed that the ambush party belonged to the most notorious Warlord, who suffered a heavy setback with the loss of a twin barreled ZU-23 anti aircraft gun and other weapons. The enemy also suffered ten dead and eleven injured while three were captured alive.

Subedar Ganga Ram, thus, displayed dourage and determiniation in his fight against the Somalian militiamen and made the supreme caerfiice.

25. 4562409 Sepoy Devendra Chand, Mahar (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 22 August, 1994).

On 22 August 1994, an escort of 5 Mahar was detailed to escort a civil convoy proceeding from Baledogle to Burleego to carry out work as part of ongoing process to rebuild the war revaged and battered infrastructure in Somalia.

When the convoy was crossing general area it was ambushed and all the three escort vehicles came under heavy automatic fire from the North of the road. The well coordinated fire from enemy weapons inflicted heavy casulties on the Indian troops with three killed and eight injured in the first onslaught itself. All this while Sepoy Devendra Chand kept on firing at the ambush party with his rifle. He thereafter directed effective fire from a medium machine gun on the enemy. Paying no attention to the deadly fire of enemy automatics he continued to engage the enemy all the while. At this stage Sepoy Devendra Chand was hit by enemy brust and his left fore arm was shattered while another bullet hit his left shoulder with such impact that he was thrown against the side of his vehicle. At the end of operations, it was confirmed that the enemy in all had suffered ten killed and eleven injured . Three of the bodies left behind were recoverred by the Indian troops and three men were captured alive.

Sepoy Devendra Chand, thus, displayed courage, and determination in this fight against the Somalian militiamen and made the supreme sacrifice.

G. B. PRADHAN,
Director.

---

No: 93-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of the "Param Vishisht Seva Medal" to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

1. Lieutenant General Surrinder Singh (IC-10008) AVSM. Armoured Corps.
2. Lieutenant General Rameshwar Nath Batra (C-10032), VSM, Artillery.
3. Lieutenant General Ravinder Kumar Gulati (IC-10447) Armoured Corps.
4. Lieutenant General Moti Lal Dar (IC-10462) AVSM, Armoured Corps.
5. Lieutenant General A.K Gautama (IC-10489) Armoured Corps.

6. Lieutenant General Romesh Khosla (IC-7777) Artillery.
7. Lieutenant General Malay Kumar Ghos (IC-7802 AVSM, Signals.
8. Lieutenant General Surender Verma (IC-8572) Army Ordnance Corps.
9. Lieutenant General Ranjit Shivdasani (IC-10104) Engineers.
10. Lieutenant General Satish Talwar (IC10457) VSM Army Ordnance Corps.
11. Lieutenant General Madan Mohan Lakhera (IC-10497) AVSM, VSM, Infantry.
12. Lieutenant General Jagdish Narain (IC-11728), AVSM, VSM*, Engineers.
13. Lieutenant General Chander Kailash Kapur (IC-12169) AVSM, Infantry.
14. Lieutenant General Apurba Daityari (MR-0990), VSM Army Medical Corps (Retired).
15. Lieutenant General Rajinder Kumar Suri (MR-1420), VSM Army Medical Corps (Retired).
16. Lieutenant General Suresh Nath Endley (IC-10107) AVSM, Engineers (Retired).
17. Lieutenant General Jawahar Lal Malhotra (IC-10109) AVSM, VSM, Mechanised Infantry (Retired).
18. Lieutenant General Kishan Bhatia (IC-10158) Army Service Corps (Retired).
19. Brigadier Mohinder Pratap Bhagat (IC-16634) Mahar Regiment.
20. Vice Admiral Raj Bahadur Suri, AVSM, VSM, (00375-A).
21. Vice Admiral Achanta Venkata Rama Narayana Rao, AVSM, VSM, (50077-K).
21. Air Marshal Pratap Rao. AVSM, VM (5188) flying (Pilot).
23. Air Marshal Verinder Puri, VM* (5199) Flying (Pilot).
24. Air Marshal Sadanand Kulkarni, VM (5292) Flying (Navigator).
25. Air Marshal Satish Kumar Sareen, AVSM, VM (5370) Flying (Pilot).
26. Air Marshal Kodendera Cariappa Cariappa, VM, (5376) Flying (Pilot).
27. Air Marshal Rajamani Ramamurthy, VSM (5614) Aeronautical Engineering (Mechanical) (Retired).

G. B. PRADHAN,
Director

---

No. 94-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of the "Ati Vishisht Seva Medal" to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

1. Lieutenant General Kevin Louis D' Souza (IC-11507) Mechanised Infantry.
2. Lieutenant General Baldev Singh (IC-12337), VSM Grenadiers.
3. Lieutenant General Ram Das Mohan (IC-12584), VSM Madras.
4. Lieutenant General Gurprit Singh Brar (IC-12642), VSM Punjab Regiment.
5. Major General Gurdev Singh (IC-11043), Signals.
6. Major General Devendra Nath Varma (IC-11624), Signals.
7. Major General Vinay Shankar (IC-12090) VSM Artillery.
8. Major General Bal Gopal Shively (IC-12200) Artillery.
9. Major General Shailendra Kumar Bhatnagar (IC-12405) Army Ordnance Corps.
10. Major General Baldev Singh Randhawa (IC-12410) Infantry.
11. Major General Boyapati Subbaiah Naidu Saraswathi (NR-12657), VSM, Military Nursing Service.
12. Major General Hind Ravi Singh Mann (IC-12813), Guards.
13. Major General Surrinder Bir Singh Kochar (IC-13247), Gorkha Rifle.
14. Major General Sarabjit Singh Grewal (IC-13264), SM, VSM, Infantry.
15. Major General Aalla Rama Krishna Reddy (IC-13379), Bihar.
16. Major General Devendra Kapil (IC-13858) Electrical and Mechanical Engineers.
17. Major General Dasarathy Raghunath (MR-01435), Army Medical Corps.
18. Major General Bijoy Prasad Das (TC-31231), Army Postal Service.
19. Major General Baldev Raj Varma (IC-11890), Jat.
20. Major General Narang Man Mohan Rai (IC-12655), Engineers.
21. Major General Samay Ram (IC-12840), UYSM, VSM, Grenadiers.
22. Major General Lilu Tahiliani (IC-12555), VSM, Signals.
23. Major General Pran Nath Lehthee (IC-13456), Electrical and Mechanical Engineers.
24. Major General Ravindra Nath Kacker (V-112), Remount Veterniary Corps (Retired).
25. Major General Jasjit Singh Talwar (IC-11061), Artillery (Retired).
26. Major General Lalit Kumar Gupta (IC-11547), Engineers (Retired).
27. Major General Mahendra Kumar Saxena (IC-10449), Sikh Light Infantry (Retired).
28. Major General Kuruvilla Jacob Koshi (IC-12256), Electrical and Mechanical Engineers (Retired).
29. Brigadier Arjun Singh Khanna (IC-15511), VrC, Artillery.
30. Brigadier Gambir Singh Negi (IC-16545), VSM, Gorkha Rifles.
31. Colonel Merchant Dinesh Purushottam (IC-26360), Madras.
32. Colonel Awadh Kishore Singh (IC-28192), VSM, Engineers.
33. Lieutenant Colonel K P Singh Deo (TA-41387), Territorial Army.
34. Acting Vice Admiral Vinod Pasricha, NM, (00522-K).
35. Rear Admiral Simant Keshari Das, (00447-R).
36. Rear Admiral Anantanarayanan Ganesh, VSM, (50122N).
37. Rear Admiral Raman Puri, VSM, (00604-Y).
38. Rear Admiral Narayan Krishnan, VSM, (60097-H), (Retired).
39. Commodore Harjit Singh Kang, VSM, (40190-R).
40. Commodore Pramod Kumar Goel, VSM, (60089-R), (Retired).
41. Air Marshal Ramesh Chandra Bajpai (5967), Aeronautical Engineering (Electronics).
42. Air Vice Marshal Tushar Sen, VM (6006), Flying (Pilot).
43. Air Vice Marshal Krishnan Narayanan Nair (6346), Flying (Pilot).
44. Air Vice Marshal Jayaraj Henry Mandody, VSM (6446), Logistics.

45. Air Vice Marshal Subhash Chandra Mukherjee (6977), Accounts.
46. Air Commodore Thirunillayi Ramaswamy Janakiraman (7058), Aeronautical Engineering (Mechanical).
47. Air Commodore Kukkehalli Prabhakar Hedge, VSM (7253), Medical.
48. Air Commodore Teja Mohan Asthana, VM (7672), Flying (Pilot).
49. Air Commodore Harbinder Singh Sidhu, VM (7682), Flying (Pilot).
50. Air Commodore Kurumthodathil Cherian Phillipose (7702), Flying (Pilot).
51. Air Commodore Anil Kumar Trikha, VSM (8436), Flying (Pilot).
52. Group Captain Dasari Jayapaul, VSM (8361), Dental (Retired).
53. GO-309W Chief Engineer Nawal Kishore Prasad, BRDB.
54. GO-697Y SE (CIV) Rameshwar Dutt (Retired), BRDB.

G. B. PRADHAN,
Director

---

No. 95-Pres/95.—The President is pleased to approved the award of the "Vishisht Seva Medal" to the undermentioned personnel for distinguished service of a high order :—

1. Major General Gurmukh Harchandrai Israni (IC-14154), Infantry.
2. Brigadier Shashi Bhushan Kanwal (IC-12551), Kumaon.
3. Brigadier Ravi Malhotra (IC-13881), Armoured Corps.
4. Brigadier Bhoop Singh Rathee (IC-13900), Electrical and Mechanical Engineers.
5. Brigadier Satinder Mulraj Chand (IC-13908), Artillery.
6. Brigadier Avinash Kapila (IC-14383), Rajput.
7. Brigadier Yadvinder Singh Teja (IC-15178), Army Ordnance Corps.
8. Brigadier Srinivasa Gopalan Govind Kumar (IC-15402), Signals.
9. Brigadier Niranjan Kishore Hegde (IC-15465), Artillery.
10. Brigadier Partha Sen (IC-15477), Artillery.
11. Brigadier Bharat Nath Kaul (IC-15847), Infantry.
12. Brigadier Amarjit Singh Poonia (IC-15856), Jammu and Kashmir Rifle.
13. Brigadier Harbhajan Singh (IC-16188), Artillery.
14. Brigadier Dilip Rajgopal Naidu (IC-16457), Engineers.
15. Brigadier Kewal Krishan Gupta (IC-16509), Engineers.
16. Brigadier Govind Ji Mishra (IC-20007), Rajput.
17. Brigadier Chandra Bhooshan Shukla (IC-20992), Signals.
18. Brigadier Ramesh Nagpal (IC-22127), Rajputana Rifles.
19. Brigadier Ajit Singh VR (IC-22365), Madras.
20. Brigadier Surinder Kumar Sanan (IC-22880), JAG Department.
21. Brigadier Marutrao Ganapatrao Kadam (IC-26187), JAG Department.
22. Brigadier Shamsher Singh Chauhan (MR-02180), Army Medical Corps.
23. Brigadier Sukumar Sengupta (MR-02855), Army Medicall Corps.
24. Brigadier Ashish Dube (IC-16079), Artillery.
25. Brigadier Satish Kapur (IC-16086), Engineers.
26. Brigadier Inder Pal Singh (MR-16670), Garhwal Rifles.
27. Brigadier Pal Singh (IC-01654), Medical Corps.
28. Brigadier Kuldip Singh Jamwal (IC-19001), Artillery.
29. Brigadier Manjit Singh Chowdhury (IC-12600), Artillery (Retired).
30. Brigadier Pooran Chand Uppal IC-13177), Kumaon (Retired).
31. Brigadier Sirpurkar Anil Narayan (IC-13261), Bihar (Retired).
32. Colonel Sukhinder Singh (IC-12024), Sikh Regiment.
33. Colonel Sadanand Mahadev Joshi (IC-16873), Electrical and Mechanical Engineers.
34. Colonel Rishard Khare (IC-17240), Gorkha Rifles.
35. Colonel Vir Chand Jain (IC 17280), Electrical and Mechanical Engineers.
36. Colonel Ashok Kumar Samantaray (IC-19386), Artillery.
37. Colonel Dalip Kapur (IC-23447), Intelligence Corps.
38. Colonel Gurdarshan Singh Grewal (IC-25060), Parachute Regiment.
39. Colonel Govind Gopal Dwivedi (IC-25466), 16 Jat.
40. Colonell Suresh Kumar Singh Rana (IC-25563), Rajput Regiment.
41. Colonel Sukhbir Singh (IC-26136), Jat Regiment.
42. Colonel Hemanth Kumar Dadhich (IC-27181), Engineers.
43. Colonel Anil Kumar Malik (IC-27708), Jammu and Kashmir Light Infantry.
44. Colonel Narinderjit Singh Sidhu (IC-28327), SM, Army Aviation.
45. Colonel Surinder Singh (IC-29734), SM, Mahar.
46. Colonel Jayaotsna Dasgupta (IC-29791), Mechanised Infantry.
47. Colonel Jagdish Prasad Pandey (SL-1312), General Service.
48. Colonel Bhaskaran Ramesh (MR-02419), Army Medical Corps.
49. Colonel Rajinder Singh Verma (IC-24274), Rajputana Rifles.
50. Colonel Manmohan Singh Kauchhur (IC-24660), Assam Regiment.
51. Colonel Kunwar Daulat Singh Shekhawat (IC-19393), 3 Cavalry.
52. Colonel Arvind Mahajan (IC-19853), Electrical and Mechanical Engineers.
53. Colonel Mohinder Bir Anand (IC-29691), 18 Cavalry.
54. Colonel Suresh Digambar Kulkarni (MR-02495), Army Medical Corps.
55. Colonel Samresh Kumar Sinha (IC 18917), Infantry (Retired).
56. Lieutenant Colonel Dharam Vir Singh Rathee (IC-25129), Electrical and Mechanical Engineers.
57. Lieutenant Coonel Ajay Kumar Singh (IC-27606), Armoured Corps.
58. Lieutenant Colonel Pramod Digambar Kulkarni (IC-27869), Army Service Corps.

59. Lieutenant Colonel Rajiv Kumar (IC-36501), Armoured Corps.

60. Lieutenant Colonel Chittaranjajn Panda (MR-04358), Army Medical Corps (*Posthumous*).

61. Lieutenant Colonel Ravindranath Gautam (MR-3471), Army Medical Corps.

62. Lieutenant Colonel Anil Bhat (IC-27129), Armoured Corps.

63. Lieutenant Colonel Yudh Vir Suri (MR-02686), Army Medical Corps.

64. Lieutenant Colonel Vallikkate Mangalathu Valappil Venugopalan (MR-03212), Army Medical Corps.

65. Lieutenant Colonel Ranbir Indar Singh (MR-4699), Army Medical Corps.

66. Major GDE Billigraham (IC-37228), Electrical and Mechanical Engineers.

67. Major Sanjay Kapoor (MR-04725), Army Medical Corps.

68. Major Anurag Ashok Garg (MR-04736), Army Medical Corps.

69. Major Kunal Kumar Mukhopadhyay (IC-30777), Signals.

70. Major Vijendra Singh Yadav (IC-38151), Milltary Police.

71. Major Kishan Lal (NTR-16419), Army Medical Corps, (*Posthumous*).

72. Captain (Miss) Sandhya (NR-18071), Military Nursing Services.

73. Captain Chandra Shekharan Pillai (SL-3798), Electrical and Mechanical Engineers.

74. JC-136970 Subedar Om Prakash, Jat.

75. JC-196204 Naib Subedar Deena Ram, Rajputana Rifles.

76. Acting Rear Admiral Pravesh Jaitly, (50166-N).

77. Commodore Pappiniveetil Gopalankutty, (00587-H).

78. Commodore Bibhu Kalyan Mohanti. (00545-N).

79. Commodore Rajeev Paralikar, (40210-K).

80. Commodore Premjeet Rabinder Franklin, (00635-T).

81. Commodore Venkateswaran Viswanathan, (00721-N).

82. Commodore Jagdish Chandra Bhatia, (50250-B).

83. Commodore Rajinder Bhandari, YSM, (00816-B).

84. Commodore Rakesh Chopra, (00824Y).

85. Commander Ravi Inder Singh, (50239-B).

86. Surgeon Commander Dinesh Chand Bhoil, (79013-Z).

87. Commander Randeep Singh, (40561-H).

88. Commander Anil Kumar Verma, (40704-H).

89. Commander Manjooran Ittyerah Jose, (00936A), (Retd.).

90. Gulzar Singh, Master Chief Petty Officer I QAI, (084638-K).

91. Prithvi Singh Master Chief Petty Officer I (SPT-I), (089727-A).

92. Air Vice Marshal Sriprerumbudur Raghavan (6710), Logistics.

93. Air Commodore Proteep Kumar Ghosh (7106), Aeronauticall Engineering (Electronics).

94. Air Commodore Srinivasan Venkatachary (6976), Accounts.

95. Air Commandore Gulshan Kumar Kwatra (8001), Aeronautical Engineering (Mechanical).

96. Group Captain Ashok Kumar (9371), Logistics.

97. Group Captain Vinod Khanna (9577), Aeronautical Engineering (Electronics).

98. Group Captain Shakti Nath Kar (10083), Aeronautical Engineering (Mechanical).

99. Group Captain Hariharpur Venkatasubbiah Hariharan (11244), Administration.

100. Group Captain Arvinda Agrawal (11502), Aeronautical Engineering (Mechanical).

101. Group Captain Dayanand Kunhanna Hegde (11743), Aeronautical Engineering (Electronics).

102. Group Captain Pradeep Kumar (12029), (Pilot).

103. Group Captain Kudip Singh Rana (12534), Flying (Pilot).

104. Group Captain Vivek Kumar Chopra (12752), Flying (Pilot).

105. Group Captain Shyam Lal Sharma (12804), Aeronautical Engineering (Mechanical).

106. Wing Commander Vinod Kumar Sharma (10670), Aeronautical Eingineering (Electronics).

107. Wing Commander Raghubir Singh Bragta (11837), Flying (Navigator).

108. Wing Commander Deepak Sawhney (12943), Flying (Pilot)

109. Wing Commander Dharam Vir Arora (13119), Accounts.

110. Wing Commander Vinod Agnihotri (13360), Medical.

111. Wing Commander Garimella Kundali Guru Prasad (13961), Medical.

112. Wing Commander Narinder Kumar (14312), Aeronautical Engineering (Electronics).

113. Squadron Leader Pran Kishore Kaul (14983), Accounts.

114. Squadron Leader Mathew George (14987), Accounts.

115. Squadron Leader Mujeeb Ullah Khan (15479), Aeronautical Engineering (Mechanical).

116. Squadron Leader Sunil Kumar Sharma (16106), Administration/Fighter Controller.

117. Squadron Leader Vinod Kumar Goel (16540), Aeronautical Engineering (Mechanical).

118. Sqadron Leader Tushar Gunvantrai Desai (17665), Aeronautical Engineering (Electronics).

119. 264724 Junior Warrant Officer Udai Vir Singh, Workshop Fitter.

120. GO-211H Chief Engineer Jagadisa Viswanathan.

121. GO-720-F SE (Mech) (SG) Amarjit Singh Khalsa.

122. GO-1278N CO I (SG) Durga Singh Rawat.

G. B. PRADHAN,
Director

---

No. 96-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of 'Bar to Sena Medal/Army Medal' to the undermentioned officer for acts of exceptional courage :—

Lieutenant Colonel Jang Bahadur Singh (IC-30030), SM, Artilllery.

G. B. PRADHAN,
Director.

No. 97-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of "Sena Medal/Army Medal" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Colonel Raj Kumar Karwal (IC-24652), VSM, 24 Rajput.
2. Colonel Dipak Kumar Mohan (IC-25490), Bihar.
3. Colonel Dhruv Chand Katoch (IC-25824), Dogra.
4. Colonel Salig Ram Singh Pathania (IC-25914), Sikh.
5. Colonel Niladri Shankar Mukherjee (IC-29165), Bihar.
6. Colonel Randhir Singh (IC-32914), Grenadiers.
7. Colonel Prem Vir Singh (IC-23666), Kumaon.
8. Colonel Karam Vir Shandil (IC-24200), Artillery.
9. Colonel Balraj Singh Nagal (IC-24260), Jat.
10. Colonel Jaipan Singh Shekhawat (IC-25216), Rajputana Rifles.
11. Colonel Satyendra Kumar (IC-25853), Gorkha Rifles.
12. Colonel Promit Roy (IC-25882), Assam.
13. Colonel Boparae Surinder Pal Singh (IC-25925), Rajputana Rifles.
14. Colonel Anand Mohan Verma (IC-27038), Rajput.
15. Colonel Mukkatira Kariappa Mandanna (IC-27384), Rajputana Rifles.
16. Colonel Kuldip Singh Aithmian (IC-27425), Punjab.
17. Colonel Kamath P Gopalkrishna (IC-27782), Madras.
18. Colonel Vinod Kumar Koser (IC-29060), Jammu and Kashmir Rifles.
19. Colonel Dalbir Singh Sandhu (IC-29331), Jammu and Kashmir Rifles.
20. Colonel Chandrasen Mukundrao Nimbalkar (IC-19059), Garhwal Rifles.
21. Colonel Krishan Kumar Khurana (IC-28914), Dogra.
22. Colonel Gurdeesh Singh Ghuman (IC-27006), Infantry.
23. Lieutenant Colonel Ramesh Singh Chauhan (IC-33483), Artillery.
24. Lieutenant Colonel Sardul Singh (IC-36274), Artillery.
25. Major Satyavir Singh Yadav (IC-39485), Rajputana Rifles.
26. Major Sudhir Hans (48214), Infantry.
27. Major Vinod Kumar Chand (IC-34391), Rajputana Rifles.
28. Major Randhir Kumar Sethi (IC-36648), Engineers.
29. Major Prabhunand Yadoraoji Parbate (IC-40912), Madras.
30. Major Sanjeev Vishisht (IC-37305), Engineers.
31. Major Neeraj Sharma (IC-41000), Army Aviation.
32. Major Ashok Chandel (IC-45923), Jammu and Kashmir Rifles.
33. Major Subhash Shankarrao Patil (IC-35231), 15 Punjab.
34. Major Rajesh Kumar Patyal (IC-39803), Engineers.
35. Captain Rajeev (IC-41550), Kumaon.
36. Captain Dhananjai Palsokar (IC-50452), Guards.
37. Captain Harinder Singh Sidhu (IC-50350), Madras.
38. Captain Arun Singh Jasrotia (IC-48171), 9 Para Commando.
39. Captain Vireshwar Prasad Sharma (SS-34935), Grenadiers.
40. Captain Jagdish Lal (IC-44630), Army Supply Corps.
41. Captain Leslie Ojit Missal (IC-50549), Maratha Light Infantry.
42. Captain Sunil Kumar Saul (IC-51036), Rajput.
43. Lieutenant Hemanta Panging (IC-50440), Jammu and Kashmir Rifles.
44. Second Lieutenant Sandeep Sharma (IC-51021), Engineers.
45. Second Lieutenant Ashish Kumar Mohanty (IC-52047), Jat.
46. JC-169160 Subedar Manohar Lal, Rajput (*Posthumous*).
47. JC-185187 Subedar Rattan Singh, Sikh.
48. JC-177116 Subedar Surinder Pal Singh, Engineers (*Posthumous*)
49. JC-198775 Subedar Ashok Baliram Rane, Artillery.
50. JC-148346 Subedar Telu Ram Mann, Infantry.
51. 4055370 Havildar Rajendra Singh, Garhwal Rifles.
52. 4546835 Havildar Jai Prasad Ray, Mahar.
53. 2466545 Havildar Kewal Dutt, Punjab.
54. 2469121 Havildar Rup Singh, Punjab.
55. 2778934 Havildar Mahboob, Maratha Light Infantry (*Posthumous*).
56. 14299338 Lance Havildar Karan Singh Rana, Signals.
57. 2879468 Naik Vijay Singh, Rajputana Rifles.
58. 5040680 Naik Purna Bahadur Thapa, Gorkha Rifles.
59. 13676083 Naik Ramesh Kumar, Guards.
60. 13742393 Naik Pawan Kumar, Jammu and Kashmir Rifles.
61. 4065158 Lance Naik Deva Nand, Infantry.
62. 4065499 Lance Naik Guman Singh, Infantry.

63. 4178338 Lance Naik Prahlad Singh, Kumaon (Posthumous).

64. 5042442 Lance Naik Ram Prasad Thapa, Gorkha Rifles.

65. 3386998 Lance Naik Joginder Singh, Infantry

66. 8026737 Lance Naik (GD) Shash Pal, Pioneer Corps.

67. 2880365 Lance Naik Birak Bhan, Rajputana Rifles.

68. 14375294 Lance Nank Dilip Rajaramji Thakre, Artillery (Posthumous).

69. 4257432 Lance Naik Bikram Tudu, Bihar (Posthumous).

70. 5448782 Lance Naik Ram Bahadur Gurung, Gorkha Rifles (FF) (Posthumous).

71. 4552722 Lance Naik Sadagar Singh, Mahar (*Posthumous*).

72. 4553862 Lance Naik Manwar Singh, Mahar.

73. 7240564 SWR (ADT) Senthil Kumar Muthusami Remount and Veterinary Corps (Posthumous).

74. 2681873 Grenadier Ajit Kumar, Grenadiers.

75. 5044736 Rifleman Tika Ram Thapa, Gorkha Rifles (Posthumous).

76. 2885124 Rifleman Diwan Singh, Rajputana Rifles (Posthumous).

77. 14494091 Gunner Raj Narayan Singh Chauhan, Artillery (Posthumous).

78. 14393428 Gunner Om Niwas, Artillery (Posthumous).

79. 7430798 Sepoy Ram Lal Patel, Mahar (Posthumous).

80. 1074926 ALD Ranbir Singh, Armoured.

G. B. PRADHAN,
Director.

---

No. 98-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of "Nao Sena Medal/Navy Medal" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Captain Rakesh Kala, (01257-F).

2. Surgeon Commander Prakash Singh, (75139-W).

3. Commander Govindan Nair Rajeev, (01537-T).

4. Commander Korada Nilakantha Rao, (01555-H).

5. Commander Rakesh Kumar Batta, (02104-F).

6. Commander Uday Vaidya, (02362-T), (Retired).

7. Lieutenant Commander Arvind Kumar Rai Sharma, (02281-H).

8. Lieutenant T P Ashok, (03252-R).

9. Lieutenant Rajeev Kapoor, (03365-Y).

10. Rajeevan Gopinathan, ERA 2 (187509-H).

11. Kirpal Singh, LS CD II (113939-B).

G. B. PRADHAN,
Director.

---

No. 99-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of "Vayu Sena Medal/Air Force Medal" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Group Captain Shyamal Kumar Banerjee (10941), Flying (Pilot).

2. Group Captain Sudhir Asthana (12202), Flying (Pilot).

3. Group Captain Vrittamani Srinivasaalyangar Govindarajan (12232), Flying (Pilot).

4. Group Captain Gurcharan Singh Bhogal (12504), Flying (Pilot).

5. Group Captain Shiv Kumar Bhan (12510), Flying (Pilot).

6. Group Captain Pradeep Kumar Mulay (12935), Flying (Pilot).

7. Wing Commander Jasbir Singh Panesar (13370), Flying (Pilot).

8. Wing Commander Selvaraj (13575), Flying (Pilot),

9. Wing Commander Mohinder Pal Singh Gill (13604) Flying (Pilot).

10. Wing Commander Arup Raha (13910) Flying (Pilot).

11. Wing Commander Pramod Kumar Roy (14100) Flying (Pilot).

12. Squadron Leader Sanjay Dattatraya Patki (16429), Administration/Para Jumping Instructor.

13. 249290 Master Warrant Officer Shunmugam Ayyanar, Flight Engineer.

G. B. PRADHAN,
Director.

---

No. 100-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of "Yuddh Seva Medal" to the undermentioined personnel for distinguished service of a high order :—

1. Major Nilratan Mitra (IC-35971), SM Artillery.

2. Wing Commander Narendra Kumar Upadhya (12779), Flying (Pilot).

3. Wing Comander Dilip Dinkar Mandpe (13937), Flyinw (Pilot).

4. Squadron Leader Prashant Eknath Patange (17706), Flying (Pilot).

G. B. PRADHAN,
Director.

## MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS

New Delhi, the 8th February 1995

### RESOLUTIONS

No. F. 8(4)/94-Hindi.—The Ministry of Parliamentary Affairs have decided to organise an All India Hindi Essay Competition on the subjects relating to "Parliamentary Democracy". The main features of the scheme are as under :—

1. NAME OF THE SCHEME
Name of the scheme will be All India Hindi Essay Competition on "Parliamentary Democracy".

2. OBJECTS OF THE SCHEME
To arouse the interest of public in Parliamentary Democracy and to encourage writing on the subject in Hindi.

3. AREA OF COMPETITION

(a) Competition will be organised at All India Level but it has been divided into two Zones :—

ZONE-I States of Uttar Pradesh, Gujarat, Punjab, Bihar, Madhya Pradesh, Maharashtra, Rajasthan, Haryana, Himachal Pradesh, Delhi and Union Territories of Chandigarh and Andaman & Nicobar Islands.

ZONE-II States of Arunachal Pradesh, Assam, Andhra Pradesh, Orissa, Karnataka, Kerala, Goa, Jammu & Kashmir, Tamil Nadu, Tripura, Nagaland, West Bengal, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Sikkim and Union Territories of Daman & Diu, Dadra & Nagar Haveli, Pondicherry, Laksnadweep.

(b) Separate Competition will be organised for each zone and their prizes will also be separate.

AMOUNT OF THE PRIZES

(a) The separate prizes to be given under the scheme for both Zones will be as under :—

(i) First Prize (Two)—Rs. 2100/- (Rs. two thousands one hundred each).

(ii) Second Prize (Three)—Rs. 1500/- (Rs. One thousand five hundreds each).

(iii) Third Prize (Five)—Rs. 1100/- (Rs. One thousand one hundred each).

ELIGIBILITY

(a) All Indian citizens can participate in the competition.

(b) Participant should be a Graduate or possessing an equal or higher degree.

(c) Mother tongue of participant should be of that zone from which he is participating.

6. SUBJECT

Subject of the Competition will be "Role of Panchayati Raj in Development of Democracy".

LANGUAGE

Language of the Essay will be Hindi.

8. GENERAL TERMS AND CONDITIONS

(a) It is obligatory for the writer to send there typed copies of the Essay.

(b) The Essay should be written by the participant himself. Statement to this effect should be appended with the Essay.

(c) Essay should not be an extract from on abridged version of a book.

(d) Essay should not be the Hindi translation of an article already published in any other language.

(e) Ministry of Parliamentary Affairs shall have the right to publish or to quote from the awarded Essay.

(f) The Essay should not have been awarded a prize under any other scheme.

(g) The Ministry of Parliamentary Affairs shall have exclusive right of selection of the recepient of the award and regulation of such selection.

(h) The Ministry of Parliamentary Affairs shall have absolute right to modify the scheme.

(i) Essay will be accepted upto the specified date only.

(j) Attested copies of the testimonial should also be appended with the Essay.

(k) No relaxation will be given in prescribed educational qualification.

9. WORLD LIMIT OF ESSAY

Essay should be limited to minimum of 3000 words and to maximum of 5000 words.

10. EVALUATION COMMITTEE

(a) The decision regarding award of prizes will be taken by an Evaluation Committee. No correspondence will be entertained in this regard.

(b) Evaluation Committee of 5 Members shall be constituted. Secretary, Ministry of Parliamentary Affairs shall be Ex-officio Chairman of the Evaluation Committee. Three Members of the Committee will be from outside.

(c) Whole procedure reg. evaluation will be laid down by the Ministry of Parliamentary Affairs. All Members/Experts including Chairman, will be paid Honorarium as laid down for the work of evaluation and T.A./D.A. as admissible under the rules, for the journeys undertaken in connection with evaluation work.

(d) In case where Essays received, are not of an appropriate level or/and number of Essays so received, is not reasonable one then the Minstry shall have the right, to discontinue the Competition at that very stage.

11. MISCELLANEOUS

(a) Ministry of Parliamentary Affairs will invite Essay by advertising in leading Hindi and English newspapers as well as leading Regional Newspapers.

(b) Ministry will inform the decision of Evaluation Committee to the prize winning participants only.

(c) The prizes will be awarded at a function to be organised by the Ministry of Parliamentary Affairs. Prize winners will be given to and from second class Rail fare.

### ORDER

It is ordered that a copy of the Resolution be Communicated to all State Governments and all Ministries/Departments of the Government of India. It is also further ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for General Information.

D. R. TIWARI,
Joint Secy.

The 9th February 1995

No. F. 4(3)/93-Hindi.—In partial modification of Ministry of Parliamentary Affairs Resolution of even number dated 25-8-94 Minister of State in the Ministry of Rural Development (Deptt. of Rural Development) and Minister of state in the Ministry of Parliamentary Affairs ceases to be the Member of Hindi Salahkar Samiti of the Ministry of Parliamentary Affairs as he has resigned from the Council of Ministers.

ORDER

It is ordered that a copy of this Resolution may be forwarded to all State Governments and Union Territories Administrations, All Ministries and Departments of the Government of India, President's Secti., Prime Minister's Office, Cabinet Secti., Lok/Rajya Sabha Secti., Planning Commission, Parliamentary Committee on Official Language, Comptroller and Auditor General of India; and Pay and Accounts Officer Cabinet Affairs New Delhi.

It is also ordered that this Resolution may be published in the Gazette of India for information of the public.

DEO RAJ TIWARI
Joint Secy.

## MINISTRY OF PETROLEUM AND NATURAL GAS

New Delhi, the 31st January 1995

ORDER

Subject :—Grant of Petroleum Exploration Licence to Oil and Natural Gas Corporation Limited for an area measuring 5770 sq. Kms. in Krishna Godavari Offshore Deep Water Block.

No. O-12012/4/94-ONG. D. IV.—In exercise of the powers conferred by clause (i) of Rules 5 of the Petroleum and Natural Gas Rules, 1959, the Central Government hereby grants to the Oil and Natural Gas Corporation Limited, Tel Bhavan, Dehradun (hereinafter referred to as O.N.-G.C.L.), a Petroleum Exploration Licence to prospect for petroleum for four years from 2nd March, 1994 (02-03-1994) for an area measuring 5770 sq. Kms., in Krishna Godavari Offshore Deep Water Block.

The grant of Licence is subject to the terms and conditions mentioned below :—

(a) The Exploration Licence should be in respect of Petroleum.

(b) If any minerals are found during the exploration work, the ONGC Ltd., should bring that to the notice of the Central Government with full particulars thereof.

(c) Royalty at the rate mentioned below shall be charged :

(i) Crude Oil :—
For the year 1993-94 an "on account" payment at the enhanced rates of Rs.528/- per metric tonne may be made subject to adjustment on issue of Notification of the final rate of royalty. For the subsequent years, payments should be on such rates as may be fixed by the Central Government from time to time.

(ii) Condensate :—
Rs. 481/- per metric tonne or such rate as may be fixed by the Central Government from time to time.

(iii) Natural Gas :—

At such rates as may be fixed by the Central Government from time to time.

The royalty shall be paid to the pay & Accounts Officer, Ministry of Petroleum and Natural Gas, New Delhi.

(d) The ONGC Ltd., shall within the first 30 days of every month, furnish to the Central Government, a full proper return showing the quantity and gross value of all crude oil, casing-head condensate and natural gas obtained during the preceding month in pursuance of the licence. The return shall be in the form given in Schedule "A" annexed hereto.

(e) The ONGC Ltd., shall deposit a sum of Rs. 50,000/- as security as required by rules 11 of the P&NG Rules, 1959.

(f) The ONGC Ltd., shall pay every year in advance a fee in respect of the licence calculated at the following rates for each square kilometre or part thereof covered by the licence :—

(i) Rs. 8/- for the first year of the licence;
(ii) Rs. 40/- for the second year of the licence ;
(iii) Rs. 200/- for the third year of the licence;
(iv) Rs. 400/- for the fourth year of the licence;
(v) Rs. 600/- for the first and second year of renewal.

(g) The ONGC Ltd., shall be at liberty to determine the relinquishing of any part of the area covered by the exploration licence by giving not less than two months notice in writing to the Central Government as required by sub-rule (3) of the rule 11 of the Petroleum and Natural Gas Rules, 1959.

(h) The ONGC Ltd., shall immediately on demand submit to Central Government confidentially full report of the Geological data of all the minerals found during the exploration of oil and natural gas and shall submit without fail every six months the results of all operations, boring and exploration to the Central Government.

(i) The ONGC Ltd., shall take preventive measures against the hazards of fire under sea bed and/or on the surface and shall keep such equipment, supplies and means to extinguish the first at all time and shall pay such compensation to third part and/or Government as may be determined in case of demage due to the fire.

(j) This exploration licence shall be subject to the provisions of the Oil Fields (Regulation & Development) Act, 1948 (53 of 1948) & the Petroleum & Natural Gas Rules, 1959.

(k) The ONGC Ltd., shall execute a deed of the Petroleum Exploration Licence in the form applicable to Offshore areas as approved by the Central Government.

(l) The ONGC Ltd., should render, Bathymetric, bottom samples, Currend and magnatic data collected during the drilling/exploration operations/survey, to Ministry of Defence, Naval Headquarters in the usual manner.

(m) The ONGC Ltd., should ensure security of oceanographic data.

(n) The entire data is processed in India.

(o) Foreign vessels if deployed for survey, are to undergo naval security inspection by a team of Indian Navy Specialists/Officers prior to commencement of survey. A minimum of one month notice about the arrival of such vessel in India is to be given to facilitate deputation of the Inspection team.

(p) A complete set of oceanographic data collected by the ONGC Ltd., in this area is made available free of cost to the Ministry of Defence/Chief Hydrographers.

(q) Raw data is not to be handed over to foreign companies and processing of all data is to be carried out in India.

(r) Intimation regarding award of contracts/Subcontracts, if any, to various Indian of foreign companies in the PEL area may be given o MOD, NHQ (DNI) by MOP/ONGCL within 15 days of award of contracts or atleast one month prior to commencement of operations by contracted/authorised companies per format (FORMAT data on award of licence/contract).

SCHEDULE—'A'

Monthly return of crude oil, casing-head condensate and natural gas produced and value thereof

Petroleum Exploration Licence for

Area

Month and Year

**A. Crude Oil**

| Total No. of Metric Tonnes obtained | No. of Metric Tonnes unavoidably lost or returned to natural reservoir | No. of Metric Tonnes used for purposes of petroleum exploration operation approved by the Central Government | No. of Metric Tonnes obtained less columns 2 and 3 | Remarks |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| | | | | |

**B–Casing–head condensate**

| Total number of Metric Tonnes obtained | No. of Metric Tonnes unavoidably lost or returned to natural reservoir | No. of Metric Tonnes used for purposes of petroleum exploration approved by Central Government | No. of Metric Tonnes obtained less Columns 2 and 3 | Remarks |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| | | | | |

**C–Natural Gas**

| Total number of cubic metres obtained | Number of cubic metres unavoidably lost or returned to natural reservoir | Number of cubic metres used for purposes of petroleum exploration approved by the Central Government | Number of cubic metres obtained less columns 2 and 3 | Remarks |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| | | | | |

I, _____ do hereby solemnly and sincerely declare and affirm that the information in this return is true and correct in every particular and make this declaration consicentiously believing the same to be true.

By order and in the name of the President of India.

M. MARTIN
Desk Officer

MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING

New Delhi, the 6th February 1995

Public Notice No. 303/43/94-F (F).—Attention is invited to the Ministry of Information and Broadcasting Public Notice No. 303/43/94-F (F) dated 25-1-1995 notifying the National Film Festival Regulations.

2. The aforesaid Regulations are hereby amended/modified to the extent indicated below :—

(A) In the National Film Festival Regulations, clause 13 will be read as under :—

Last date for receipt of the application alongwith the print in the Directorate of Film Festivals shall be the last working day in the month of March of the year in which the awards are to be announced.

(B) In the National Award for the best writing on cinema Regulations, clause 8 will be read as under :—

The last date for receipt of entries for both the awards is the last working day in the month of March of the year in which awards are to be announced.

P. GOPALAN
Desk Officer

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1995
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad and Published by the Controller of Publications, Delhi, 1995